

156-
Deli
Makutaya



I 2043

देवीमहात्म्ये ६३ स्कन्धे काव्ये ३४ कुटुम्बकादयः
चलन्ति हि हि हि हि हि हि हि हि हि हि हि हि हि हि
० ग्राह्यम्

156.
Devi Mahat-
mya.

2043

I

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः शिवाय ॥ अथ श्रीवृद्धादिधातुवर्तकस्तुतु ॥
अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥
अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥
अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥
अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥

कथं धनं धनं सतात्विगत्तु यच्च निरुक्तं सक्तविद्युत्तु कल्या
मात्तुलि सक्तं कथं नन्द दावर्ग्युह्यो ॥ अथामके ॥
अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥
अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥
अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥ अथामके ॥

३

नमस्तस्य सर्वरुतवर्षकवि । कवचकीर्तिनादया सर्वपापे ४ पुमयस
 गजिविमलैकथावाग्धे विषमदुर्ममरुथा ॥ पुतासनकाशमल्लिवा
 नाहंसदिवासनास्त्रिदीगजसमावृता वैष्णवीगमूढासना । मा
 श्वयीवृथावृता कोमावीगिरिवोहना ॥ वक्राधीहंसमावृता स
 द्वाहवधोरुषिता । कनकाकविमानका ववयुताववायूध ॥

न

देहानादहनामय रुकानामरायायवरादिनादवदवामि
 सर्वमैश्वरिनामिनि ॥ यथायव कुरुमाहन्दी ॥ नयमिषवादिनी
 । दकि । धौचववावाही नैजत्यस्वमध्याविधी । यतीयावावृता
 वके द्वाययांमृगवादिनी ॥ उदीयावकोकोवरी व्हीमन्या
 गृहवाविधी ॥ उर्ध्ववक्राधीमवृके दधस्ताद्वैष्णवीतथा ॥ य

२२

२२

४

दमादिभात्रकं सामुद्रमववादिनी ॥ जयामया यन ४५ ॥
विजयायादुवृष्ट ४५ ॥ अजिगावा मया ॥ दकि ॥ होयाय
जाजिता ॥ मिषाभिआतिनीवकं इमामुद्रियवस्कितामाला
धवीललाट उरुवीवकं शमहिनी ॥ शिनगायकं वामा
नासाइयमद्यमिका ॥ गंविनीन नम ॥ धनु ॥ ग्रहयोदीववा

श्री ४५
४

१०५० क

सिनी ॥ कपाली कालिकात्रक ॥ कलुस ललु ॥ श्री ॥ नासिका
यासिगन्धाय उद्धाष्टव ८ याकेही ॥ अथयसामृतात्रक ॥ कि
कायायसवस्वती ॥ दन्तानुकुकोमावी कर्मवकादुवलि
का ॥ घमिकायाविगद्यधम मरुमायावतालका ॥ कामका ॥
विवृकं वकं दविमि सर्वममला ॥ श्रीवायासुडकालीय पृष्ठ

ज

वैभधन इत्री नील ग्रीवा वहिक (८) ललितानल कवचा क
र्तुया ४४ मरुत्ताय वा कथ्य वज्र विधी ॥ रुक्म याई छे रुक्मा
त्यं गुल्या मन्त्रिका तथा ॥ नखास्तु लभ्यती प्रकृत् कृत्वा वक्रनेले
भ्यती ॥ सुनी प्रकृत् न हादवी मन ४० गी कविनामिनी ॥ ददयल
लितादवी ॥ उदयसर्व्य वाहिनी ॥ नासिका मन्त्रिका प्रकृत् दुर्क्यु

गी ३५
३

अभ्यती तथा ॥ इन्द्राभर्तु यमप्रकृत् कृत्वा गगनवती तथा ॥ अर्धमहाव
लायी का जानम ॥ अविनायकी ॥ गुल्या न विमिही व वादपृष्ठ
वक्रजली ॥ यादा गुली ग्रीधवी व मलयाल लवाहिनी ॥ दंडी क
ली नखाश्च कमान्मवाहक मिनी ॥ प्रामे कृत्वा कुकोमा वी ॥ त्वर्वमाद
भ्यती गुला ॥ प्रकृत् न ज्ञा वसा मरुत्ता ॥ त्वरिम ॥ अदुया वती ॥ अर्धमानि

नके २

५

कालवाजीवयिहवमकूठश्वरी॥ यमावतीयमकारमकरुव
जामगिहथामालामूवीनरवदालित्वय्यासर्वसन्धिभूमि
वृक्षाहीमयकल्लायीकुरुश्वरीतथासमाहंकाववृद्धिर्म
कर्मधर्मधरिणी॥ योनायानीतथायानसमानादानमवच
कुरुहस्तवमयकल्लायीकल्लायीवमरुनी॥ यमवृयतथागन्ध

महस्यमवयानिनीसत्यकुरुमस्येववक्रनावायहीमदा॥ य
यंयकुरुवावाहीधर्मवक्रवृक्षुवी॥ यमावतीयमकारमकरुव
वक्रवृक्षुवी॥ विल्ववक्रवृक्षुवीकीर्तिमायवृक्षुवीयमवृक्षुवी
मयथामयक्रुद्विजनसर्वसंकिता॥ वक्राहीननुयल्लायीवक्रि
नीकवचनय॥ ननुवक्रमदविजयनीयापनामिनी॥ वक्रम

१

सर्वगानि, दुर्गदुर्गाय हाविधि ॥०॥ कीर्तक व वंदि वी विमन्त्र
 य ४ य ० न व ४॥ सर्वपाप विनिर्मुक्त ४ ग ४ धा म य म जित ४॥ सर्व
 जित्वा गुल लक्ष्मी वान् दानि द्रु विपु नो गृह्ण ॥ य १ श्रु द क व रं कृत्वा स
 ग्रामे य विगने न व ४॥ स सर्व विपु न्मवा निर्जित्वा सु गृह्ण वृत्त ॥ म
 ह म ह र्ग क व रं सफ म ह्या ४॥ सु ॥ ह र्ग ४॥ आ दो रु क व रं कृत्वा य

३२

आत्मक गीती ३५ ॥ स सिद्धि रज न निर्विषे ला का दु र वि क म ३॥
 र या ह म य न री ता द द्वा म य न व न्ध ना ॥ य ग म ल म य न वा मा
 द नार्थी ल र न ध र्ग वि शार्थी ल र न वि श म र्थार्थी ल र न क्लि य ॥ य
 पू र्ण ल र न यूर्ग म न न य रु की र्ण य ॥ ०॥ श्री यि र्ग ल र न का र्म स व न्ध
 प ति व ल्ग ४॥ सर्व पाप य म य न स फ ज न्म क र व र यि ॥ ॥ ॥

॥ ०॥ ति यी नू द क र्ग व यो क व रं स ना र्क ॥ ५

८

॥ जय हृदय विद्यामुखं जय हृदय गुरुनामिनि ॥ जय सर्वगत हृदय कालमात्रिणमात्म
 ॥ नमः शिवाय ॥ ॥ मां हं हृदय उवाच ॥ जय नमो भगवता काली
 रुद्रकाली कपालिनी ॥ इमां कृता मिवाधारी स्वाहा स्वधामनामु
 तं ॥ मधुकैठ रुविडा विविध हृदय नमः ॥ वृषदहि जयदहि
 यः मादहि द्विर्जहि ॥ महिषासुरनिर्नामि धूम्राकृत्य विमर्दिनि ॥
 वृषदहि जयदहि यः मादहि द्विर्जहि ॥ वृषदहि वृषदहि

वक्रवीजविनामिनि ॥ वृषदहि जयदहि यः मादहि द्विर्जहि ॥
 मुक्तये वनिमुक्तये सर्वदेवनिपातिनि ॥ वृषदहि जयदहि यः
 मादहि द्विर्जहि ॥ वन्दितं द्विष्य गदये दविषो गगनायिनि ॥
 वृषदहि जयदहि यः मादहि द्विर्जहि ॥ जयिष्य वृषयविनं स
 र्वमेकनिवाविधि ॥ वृषदहि जयदहि यः मादहि द्विर्जहि ॥ नमः

४ सर्वदा रक्षा च लुके इति ताये ॥ इयं दहि जयं दहि यामा दहि
 द्विषं जहि ॥ सुवशा रुकि पूर्वत्वा च लुके वाधिना गिनि ॥ इयं दहि
 जयं दहि यामा दहि द्विषं जहि ॥ च लुके सत तं यत्वा सर्वयन्ती रु
 रुकि रु ॥ इयं दहि जयं दहि यामा दहि द्विषं जहि ॥ दहि सो हा य
 मात्रा यं दहि दवि यं सर्व ॥ इयं दहि जामा दहि यामा दहि द्विषं

श्री ३

जहि ॥ विरधहि दवि कल्याणं विरधहि विपला श्रियं ॥ इयं दहि जयं
 दहि यामा दहि द्विषं जहि ॥ विरधहि द्विषं तानां गं विरधहि वलं मू
 र्कं ॥ इयं दहि जयं दहि यामा दहि द्विषं जहि ॥ सुना सुन मित्रा न
 मित्रा वल निघृष्ट वमनं नृजं ॥ इयं दहि जयं दहि यामा दहि द्वि
 षं जहि ॥ विद्या वर्क यामा वर्क लक्ष्मी वर्क ऊर्न कू ॥ इयं दहि जयं

दहि यगोदहि द्विषंजहि ॥ दविषु वलुदादलु देसु दूर्यविनामि
 नि ॥ दूर्यदहि ऊर्यदहि यगोदहि द्विषंजहि ॥ यव लुके सूर्यदूर्य
 धि चलिक पक्षे नायम ॥ दूर्यदहि ऊर्यदहि यगोदहि द्विषंजहि
 ॥ चतुर्लुङ्गवतुर्वक सँसुत यवमभवि ॥ दूर्यदहि ऊर्यदहि यगो
 दहि द्विषंजहि ॥ कृष्ण न सँसुत दवि सभ्य कृष्ण तमन्विक ॥ दूर्य

भीमजी

१०

दहि ऊर्यदहि यगोदहि द्विषंजहि ॥ हिमालय समानाथ सँसुत यव
 मभवि ॥ दूर्यदहि ऊर्यदहि यगोदहि द्विषंजहि ॥ नृत्वा भीमसि
 हाव पूजित यवमभवि ॥ दूर्यदहि ऊर्यदहि यगोदहि द्विषंजहि
 ॥ देविरुक्ता जनादास दहानेदा दयान्विक ॥ दूर्यदहि ऊर्यदहि य
 गोदहि द्विषंजहि ॥ यत्नीमनी वमादहि मना वृत्तानुसा विधी ॥

मातृहीनदुर्गसंसार, सागरस्य कूलोद्वर्ग ॥ २३ ॥ ॐ दंताय नमः ॥
 दुर्महाकाय ॥ ० नमः ॥ ४१ सवसेकमसीसंख्या, ववमात्रातिसेयदं ॥
 ॥ ॥ ॐ ह्यर्ग्या सुनि ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
 नदहाय, निवदीदियचक्षुष ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 सामाईध्यात्रि ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

[illegible]

दंभुर्न ॥ स्नाय ॥ श्वे व व छि का या ॥ सर्व गुर्गु च का व ल ॥ १ ॥ समां स
 न ॥ स प ॥ श्वे न ॥ तयि था व नि र्य तु र्ग ॥ सायि के म म वा धा नि स
 र्व भ व न र्ग य ॥ कृष्ण या म्वा च रु र्द ॥ म क र्मा वा स मा हित ॥
 द दानि पु नि गृ ङ्गा नि ॥ नान्य ॥ थे षा पु सि द्ध नि ॥ १ ॥ थं दू प द को
 न न ॥ म द्वा द व न की लि र्ग ॥ या नि ॥ की र्णा वि ध र्थे ना नि र्य

जय नि स कू ट ॥ स सि द्ध ॥ म ग ल ॥ सायि र्ग ध र्वा जाय न व न ॥
 न र्थ वा ॥ १ ॥ क र्मा र्थ कायि न जाय न ॥ नाय मृ त्यु र्ग यानि
 मृ ते मा क म वा सु यो ॥ १ ॥ स्नाया वा व र्थ क र्वा न ॥ अ क र्वा र्थ वि न
 श्रु ति ॥ न न ॥ स्ना ले व स म्प न्नि मि र्द या व र्थ न वृ थ ॥ १ ॥ सी र्ग ग्धा दि
 व य कि चि ॥ दृ श्य र्ग ल ल न अ न ॥ १ ॥ न र्थ र्थ स द न र्ग न जा

यमिदं वद ॥ मनेरुजयमानसिन् स्फुल्लं पतिवृद्धक ॥
 वल्लवसमप्रदि नत ४ पा वल्लवामियात् ॥ वेभ्यथी तल्लवमाद
 न सोल्लवामो ग्यसीपद ४ मकुटा निःपवोभाक स्फुल्लं पतिवृद्धक
 किं जने ४ ॥ गूतिगीरगवह्याः कीलकं समाह ॥

श्री

उंजस्यथीसकमनिका पुधमवविहस्य वक्रा मधिग्रायगीहृद
 श्रीमहाकालिदवता वक्रदन्तिकावीर्जनन्दजामकि ४ अग्निगले
 सर्वक्रमेसमनार्थं अहिष्टरुलपायार्थं जयविनिधाय ४ ॥
 उंनदयल्लिकाये ॥ ॥ मार्कल्लयउवाय ॥ ॥ सावर्णि ४ सु
 र्यतनया यामनू ४ कथानस्य ४ निगमयत इत्यल्लि विह्वला

प्रदत्ता मम ॥ महासायानुवादेन यथा मन्त्रकथाधियं ॥ मव
रुवमहासाग स्मावल्लित्तिनया वव ॥ स्वायाविषकनयुर्व
वेववमसमृद्धव ॥ सूत्रथनामवाजाह न समस्तकितिनधु
ले ॥ मस्ययालयन ॥ संम्यकपुजा ॥ पूजानिवो वमानु ॥ वव
वृ ॥ वववाहयो ॥ कालाविर्धिसिनस्तथा ॥ तस्यमव वववयुव

ममिपुवतदलिन ॥ न्यनेवपिसनैर्युद्ध कालाविर्धिसिनि
ज्जिन ॥ तन ॥ स्वयं वमानो ना निज्जदमधिधो वव न ॥ अज
न ॥ समस्तसाग स्मादोपवला विमि ॥ अमात्यविलिति
ईष्ट ईष्टलस्य इवात्मनि ॥ काधावल्लयापदनं तनापि स्व
युवतन ॥ तनामृगयायाऊन दनस्वाम्य ॥ मरुपनि ॥

ॐ का की रु य मा नू अ उ ग म ग र् न व न ॥ स न क्रा थ म म डा
की द्वि ज व र् य स म ध स ४ य मी नः य द को र्मु मू नि नि धा
य मी रि तं ॥ त लो क वि न्त का लं के मू नि ना ग न स लु नः
हं न र् य न ग वि व र् व त सि नू नि व र् य ध म ॥ भा वि न्त य रु दा त
न म म त्या कृ ष व न न ४ म ल्य व र् य वि न्त प र्व म या ही नी य र् व

ग्री ३
१५

रि न त ॥ म र् रु लो क व स दृ ल र् च र् म त ४ या ल्य न न या न गान स
प धा ना म गृ व रु ली त दा मे द ४ ॥ म म व वि व र् ग या त ४ का डी
ग न य ल स्य न य मे मा नू ग ता नि र् य य सा द ध न शा क न ४
॥ अ नू व र् ति क र् व न य क र् व ल्य न्य म दी रु ता अ स न्य थ य
भी लो क ४ क र् व दि ४ स न र् य र् य ॥ म वि न ४ सा पि ३ ४ य न क

यथाप्रागमिष्यति तत्तुष्टान्यत्रसमर्त विन्तयामासपाथिवि
॥ गुरुविद्यांशमास्यास वेष्टमकीददमस्त ॥ सपृष्टस्तनक
ह्यन्ता रुडुष्टागमनगुक् ॥ सगुक्तकवकस्मात्तु इमानी ॥
वृत्तलक्ष्म ॥ वृत्ताकवृत्तलक्ष्म रुयम ॥ युक्त्यादिनी ॥
पुष्ट्यावसर्तवृष्ट ॥ युक्त्यावनतानृय ॥ ॥ वेष्टउवाच ॥ १४

समाधिर्नामवेष्टा रुमत्यनाधनिर्नाकल ॥ युक्त्यावनिवस्त
ष्टधनलीलादमाधुति ॥ विहीनष्टधनेष्टवि ॥ युक्त्यादायमेव
नी ॥ वनमस्यागमाड ॥ विहीनष्टधनेष्टवि ॥ सारुनव
प्रियुक्त्याष्ट ॥ कुमलाकुमलास्तिकी ॥ युक्त्याष्ट ॥ युक्त्याष्ट ॥
गताष्ट ॥ युक्त्याष्ट ॥ किन्तुमष्ट ॥ युक्त्याष्ट ॥ युक्त्याष्ट ॥

यार्थिवसकमः॥ कृत्वा तु मीयथा न्यायं यथा ह न नसीवि द
॥ उग्रविहो के था ४ काग्नि चक्रुर्ध्वं मा यार्थिवी ॥ ॥ ३॥ ॥ ॥
यत्तु गवँ ह्या महं पुष्टं मिच्छामा कँ व द ह्य तत् ॥ इन्द्रो य य
भ्रम न स ४ स्व वि ह्यो य क ता वि ना ॥ म म त्वं म मे वा अ ह्य वा अ
॥ ग व वि ल स्य पि ॥ जान मा पि य था ह्ये कि म त न्म नि स

क म ॥ अ यं च नि क म ४ यत्तु द्रो वं ह्ये क र था ग्नि त ४ ॥ स ग
न न व स न्म क सृष्टु हा दी क था य ति ॥ व म स त था ह्ये
॥ व य ह्ये न ४ वि मी ॥ द ह्य दा य पि वि ष यं म म त्वा क
॥ म न सी ॥ त क ने न म हा ता ग य मा हा ह्य नि ना य पि ॥
म मा स्य व रु व ह्य वा वि व का न्ध स्य मू र ता ॥ ॥ अ धि वृ ष व

ज्ञानमस्मिन्मस्तु जन्मार्थिष्वयं गच्छ ॥ विषयश्च न हा
सागं जातिर्येवं पृथक् पृथक् इति वाच्यं ॥ यानि न ८ कवि
उक्तानि सन्तु ॥ केचिद्विदो न तथा गतो यानि न सन्तु ॥ श्री १
दृष्टयः ४ ॥ ज्ञानिनामनूजाः ४ सर्वं किन्तु न नहि कवली ॥ य
नाहि ज्ञानिनः सर्वं पश्यन् किन्तु न नहि कवली ॥ ज्ञानं कर्म न नृणां

नां यत्कर्म मृगयति किं ॥ मनूष्यानां यत्कर्म षोडशमन्यत्कर्म ॥
रुयोः ४ ॥ ज्ञानं यि सति यत्कर्म तात्पर्यं न भवति ॥ वचनं ॥ कर्म भा
कादृतामोहात् ॥ यीशमानानपि दूषा ॥ मानूषा मनूजा यद्यु साहि
लायाः ४ ॥ सन्तु ॥ लोकात्पुण्यकादाय न नर्तकं किं न यथासि
॥ तथापि मम तावत् ॥ माह गुरुनिपातिता ॥ महाभाषा यत्ताव

न. सीसावलि निकाविदो ४१ कन्याविस्मयः ४ कार्या. आगनिदो ४
म. लोके ॥ महासाया रुच्ये वा. तथा समा. कर्मजगत्. स्थानिना
मपि यं तां सि. दवीरुगवती हि सा ॥ वलोदा कृष्णभा. लोये महासा. ॥ २०
यायुयकुनि. तथा विस्मय. कविर्ष. जगद. रुच्ये वा. चर्व. ॥ सीसाव
सन्नाववदा. रुच्ये वा. कविर्ष. कथ. साविद्याय वसामूर्क. रुच्ये वा. २०

सन्नातनी ॥ सीसाववन्ध. रुच्ये वा. सीवसर्व. मय. मयी ॥ ॥ वा. जा. वा. व
॥ रुगवन्का. हि सा. दवी. महासा. येनिय. रुच्ये वा. ॥ रुच्ये वा. कथ. म
त्यन्ना. सा. कर्मा. स्या. मयि. किं. द्वि. ज. यत्. रुच्ये वा. वा. व. सा. वयी. यत्. रुच्ये वा.
यत्. रुच्ये वा. ॥ रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. ॥
अवि. रुच्ये वा. ॥ रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. रुच्ये वा. ॥

पितृसमूहमिदं रुधिरं यथा मम ॥ देवानां कार्यं सिद्धयर्थं
विश्वं विसृज्य ॥ उत्पन्नं किं न दास्ये ॥ सा निष्ठा यमिधीय
त ॥ यौगनिर्णयदा विष्णुर्जगत्कालुषीकृतं ॥ अस्मीत्यर्थं भूष
मस्तु ॥ अल्लोकांस्तु गगनानि येषु भूतानां वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
मधुकैटभा ॥ विष्णुर्कलुषं मलं कृत्वा हर्तुं वक्षानमूयमानं नानि

कमलविष्णुः ॥ किं नावका प्रजायति ॥ दृष्ट्वा तावत्सुनीयाः प्रो-
यस्य कर्कजनादनी ॥ दुष्टा वयागनिधाना मकाग्रदयस्किं
॥ विवाधनाथमयहय हरिभक्तकुमालया ॥ ॥ शुक्ला वायु ॥
विष्णुभक्तनीतिगङ्गायां किमिदं नावका विधा ॥ कोमिनिर्दिष्टग-
वर्मा विष्णुवत्सलजस ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कावस

नास्तिका ॥ सुधात्वम कथनित्य सिधमा नास्तिकास्तिका ॥
 द्विमा नास्तिकानिषा यान्त्राया विरंग घन ४ ॥ तमवसा त्वसा विनी
 त्वद्विजननीयना ॥ त्वय न द्वा जत विभं त्वय न त्व द्वा जत जग
 ॥ त्वय न त्वाल्य न दवि त्वम त्वान्न य सर्व ना विरु द्वा त्व द्वा
 त्व स्तिमि त्वया य वाल न ॥ कथम स द्वा त्वि त्वया न्न जग ना त्व जग

श्री ३
 २२

नमय म हा विद्या महा माया महा म धम महा म्म नि ४ ॥ महा मा हा
 वरु वही महा दवी महा सूत्री ॥ पु क्तित्व के सर्वस्य शु ल नु य वि
 शा विनी ॥ का ल ना निर्म हा ना नि भा दि ना नि म्म दा वृ ध्मा ॥ त्व यी त्व
 मी म्म यी त्व द्वा त्व वृ ध्मि धा ध ल क द्वा ॥ ल जा द्वा द्वा त्व धा उ धि त्व म
 नि ४ का नि य व य र ख द्वा नी गू नी नी धा ना ग दि नी य क्रि दी न धा

भक्तिनीचायिनीवाला उद्युष्टीयविद्यायुधगोमोम्यासोम्यनवालाय
सोम्येयस्यनिसुन्दरी॥ यमायवाभीयवमात्मनवयवमन्धवीयव
किंविल्लविदसुसदसकाविलोत्तिक॥ तस्यसर्वस्यमानकिं२साल
किंसुयभगदायमात्वयाजगत्स्यजगत्पोताहियाजगत्॥ सो
यिनिजावर्गनीक४कस्त्याकिउमिहयव४विष्णु४भवीयवहृदीस

श्रीराम
२३

हमीभानपठवगाकाविनामयनातल्याकस्त्यामकिमान्वयव॥
सात्वमिह्युतावे४स्ववृदावेदविमस्तुता॥ सोहयमीद्वयार्थोव
समीमधुकेठसोयवोधसुजगत्सामीनीयनामयतालेय॥ वा
धम्यक्रियनामस्यहनुभमीमहासूत्री॥ अविगुवाच॥ यवस्तु
ताकदादयीनामसीतवधसा॥ विष्णु४यवोधनार्थयनिहृत्तम

[illegible]

शक्रयुद्धवत्साकिरुः नावयति वल्लो नलो महामायाविमोहिनी ॥
 उक्तवज्रोवनात्सला विमलामितिकमर्व ॥ श्रीरामायणनूपाच ॥
 रुद्रतामयमंडुको ममवक्ष्य वृत्तावधि ॥ किमन्यनववनात् ॥
 वक्ति वृत्तमया ॥ ॥ मयि नूपाच ॥ वक्तिरस्यामिति नदा सर्व
 माया मयं जगत् ॥ विलोकात्स्यामिति नदा रगवान्कमलकक्ष ॥

[illegible][illegible]

नयिपूवन्दय नगसुखेन लावीर्य इवसेन्यपवाजितः। जि
त्वावसकलान्दवानिदोह नमहिषोसुवः॥ ननः४यवाजिता
दवाः४पेनयोनिपुजापतिरयुवस्तुत्य नमास्तुत्य यस्तुममन
उधुजो॥ यथावृहन्तथोस्तुह नमहिषास्तुवयष्टिर्नमहिदगाः४
कथयामास्तु दवास्तुवविसुवः॥ सूर्यान्दा न्यनिलान्दनी यम

त्यवद्रुमास्तुव अन्यर्थावाधिकागान्तु सुयमवाधिनिकृतिः। सु
नान्तिवाकृताः४सर्वं मनदवगमास्तुविवाविचवक्रियथामस्तु
महिषोऽवात्मनाः४ननः४कथितमर्चममवाविविचष्टिर्नम
गवमोक्त्यपेनोः४स्तुवयस्तुवविचिह्नानिर्लथं निमम्यदवा
नीवासांसिपूस्तुदनः४॥ वकावकायंमं तुष्टुष्टु कूटीकूटि

लाननी ॥ नमो नमो कायधूर्यस्य चक्रिणीवदनाह्वयः ॥ निश्चक्रा
 ममरुहजा वक्रहा ॥ गोकवस्य ॥ अन्यथा ॥ केवदवाता ॥ गकादी
 नां गवीत्रसः ॥ निग्ननममरुहज लुखे कीसमगकृत ॥ अनी
 वक्रजसः ॥ कटं दालनमिवयवर्त ॥ ददुलुससुवाकृगका
 लायाफदिगकव ॥ अउलीनगुनरुज ॥ सर्वदवगेवीत्रज ॥

श्रीगुरु
 २०

७ कल्लनदहनावी वाफला कवयलिषा ॥ यदहकाकवर्त
 जल्लनाजायननमूर्य ॥ याम्यनवाकवन्कमी वाहवाविष्क
 जसा ॥ सीमनल्लनयार्थ ॥ मध्वचैन्दुदोवाकवन् ॥ वावृलीनव
 ऊधाय ॥ निग्नमल्लजसाकव ॥ वक्रहाकजसायादो नदगुली
 ककजसा ॥ वरुनाके कवीगुल्य ॥ कीववदोचनासिका ॥ नम्या

मुदना १ सीरुता २ याजायथ नरजता ३ नयन छित रयं यं ह न
 था याव कर्तुं जता ४ कुवो रम्यं यो रुज ५ वधो वनिल स्याव ६
 अनायासै वदयानां समुद्र रुज सीमिता ७ नर ८ समरु दयानां
 नका वागिसमूहवा ॥ नाविलो कं मुदीयाय ९ समरोमहिषादि
 ता १० गूलि गूलादिनिष्कृष्य ददौ नस्येपिना कथं ॥ वक्रयेद

२८

रुवान रुक् १ समन्याद्यस्वयक्रुत २ १ मखर्य ववृक्ष ३ मकि द
 दोनस्ये रुनासेन ४ ॥ मावृमोद रुवांश्चर्य वान मुलुं कथयूथी ५
 वज्रमिन्द्र समन्याद्य कूलिगमदमवाधिय ६ ॥ ददौ नस्ये सरुषाका
 द्युष्टीमे वाव नान्जाना काल दुष्टा यमा दधुं यागं याम्ययमि
 र्ददौ ॥ प्रजापतिश्च कमाली ॥ ददौ वक्रा कमलं ॥ समरुवा

मङ्गलम् निजलक्ष्मीदिवाक्यं ॥ कालं दत्तं वा-
निर्मलं। श्रीश्रीदग्धमेलं वा मङ्गलं च तथाम्बु ॥ यजमानि न
थादिवा कथुलं कटका निव अर्द्धचन्द्रं तथा सुर्गं कथुलं न
वैवा रुष ॥ नृपुत्री विमलीतद्व (शुभयकमनू र्म) अर्द्धवैय
कवत्तानि समस्तार्थं गुलीषु च ॥ विश्वकर्मादिदीनस्य पत्रं

शक्तिनिर्मलं अर्द्धाद्येन कथ्यामि तथा रुष्यकदं गनं ॥ अर्द्धा
नृपकजीमाली, निवस्य वसिष्ठा पत्रां अर्द्धदत्तं लक्ष्मिस्तु पत्रं क
शक्तिः अर्द्धन ॥ हिमवानुवाहनी सिद्धि, वत्तानि विविधानि च ददा
वगुन्यसु वया, यानमा र्द्धनाधिप ॥ १॥ अर्द्धं सर्वनागम् अर्द्ध
मयि विरुषिणं नागहार्दददीनस्य धरुय १ पृथिवीमिमां ॥ अर्द्ध

नपितुनेधवी, लघनेवायूधेक ॥ १ ॥ समानिताननादावे ॥ साह
 हासंमूकर्मक ॥ २ ॥ तस्यानादनधावधो, कृत्स्नमायुत्रिर्गनर ॥
 अमायनातिमरुता, युक्तिमयोमरुतनरुत ॥ ३ ॥ वृक्षरु ॥ सकलासा
 का ॥ ससुखोयैव केमिप ॥ ४ ॥ ववालयवसुधायम ॥ सकलायमाहि ॥
 धवा ॥ ५ ॥ जयतिदयायमूदा, तामूव ॥ ६ ॥ सिंहवाहिनी ॥ ७ ॥ दुष्टवृत्त ॥ ८ ॥

नयाम्येनी, रक्तिनमात्ममूर्त्त ॥ ९ ॥ दृष्ट्वा समर्कसंशुद्धिं लोकात्
 समवायय ॥ १० ॥ सन्नखानिलेसंन्यास, समरुत्तुवदायूध ॥ ११ ॥ आ ॥
 किमनदिमिकोध, दानाद्योमदिषासूत्र ॥ १२ ॥ अत्यधवतनमंद
 म ॥ १३ ॥ मंथवसूत्रवृत्त ॥ १४ ॥ सददमनतादधी, याकलाककुर्मात्पुत्रा
 पादाक्रान्ता नरुव, किरीटास्त्रितितान्यनी ॥ १५ ॥ कारितामेध

पाताली धनार्थनिस्तननता ॥ दिग्गजसुहृदो समन्तात्
 प्रसीदन्ति ॥ ततश्च वृक्षयुद्धं तथा दद्यात्सर्वद्विषां गच्छन्ति
 सर्वधामके वादीपितदिगन्तव्यं ॥ महिषासुरसैनानी शिशुना
 श्यामहासुव ॥ ययुधयामवस्थान्ये श्वदुर्वगवलावित ॥ वध
 नामयुगे ॥ षड्विंशदश्यामहासुव ॥ अयुधनायुगानां च ॥ ३१

सरसधमहासुव ॥ ययुधमहिषनिजनेवसिर्वांमामहासुव ॥
 अयुगानां गे ॥ षड्विंशत्कलाययुधवत् ॥ गजवाजिसहस्र
 धी रनेके ॥ यविवाविन ॥ वृत्तोवथनाकाद्याय युद्धमस्मिन्नेय
 ह्यत ॥ विजालाश्यायुगानां च ययुधमहिषवथयुगे ॥ ययुधस
 युगगतु वथानीयविवाविन ॥ अन्येवतुयुग ॥ यथना

गहयेष्टमा॥१॥यूयूध॥संयूगदद्या सहतनुमहासूरा॥काटिका
 टिसहसेलुवथाना दन्तिनांतथा॥रुयानाकेष्टमायुद्धनगर
 नदियासूय॥१॥मोमयेहिन्दियालेथ मकि किर्ममेलिस्तथा॥भीरुना
 यूयूध॥संयूगदद्या स्वप्न॥पक्वमुपदिष्टे॥कविचविक्रिय ३२
 ॥मोकी॥कवित्पागीस्तथापय॥दवी स्वप्नपुहारे लुक्कनी हनुय

वक्रम॥सायिदवीनरुक्तानि मस्तुग्धस्तुनिवलिता॥लीन
 येवयविकृद निजमस्तुस्तुवर्षिनी॥अनायस्ताननादवीस्तुय
 नानास्तुनर्षिनि॥ममावास्तुवदहृष्ट मस्तुग्धस्तुनिवर्षिनी॥
 सायिकृद्धाथुहृष्टा दद्यावाहनकमत्री॥यवावास्तुवमन्यष्ट
 वनधिर्वरुणाभने॥नि॥मस्तुमस्तुवर्षिनी॥यूयूमानावर्षि

निका। तत्र वसय ४ संरुता गुण ४ म तसु रुसु मं ४॥ ययूधुस्त
 यत्र मुक्ति किं निया लासि पदिसे ४॥ ना मय मो सुव गधम दवो म
 ह्यु यवृदिता ४॥ अवा दय म यद हानु गधम ४ म र्या सु था य
 व र मुद र्ग म थ क थे वा न्य तस्मि नु य द्दे म हा त्स व ॥ ततो द वी
 वि गूल न ग द यो म कि वृष्टि रि ४॥ ख न्ना दि रि थ म त र्ग म निज

श्री ३३

धानमहासुवान् ॥ यात यामा सर्वे वा न्या ल्प लो सु न विभा हिता
 न् ॥ अ सु वा न् ॥ वि या लो न व द्वा वा न्या न क र्ष य ७ ॥ क वि दि धि
 क ता स्ती क्ते ४ ख म यो म सु थ य य वि यो थि ता नि या न न ग द
 या लु वि गे व म ॥ व म थ क वि दू धि व म स र्वे न रु र्ग र्ग ता ४॥ क
 वि नि य नि ता रु मो रि ता ४ गूल न व क सि ॥ नि व न्क म ४ म वी ध

न कृताः कश्चिदपि जिवः। गता नृका विधेः ४। १०। नृमूवृत्ति
दमादना ४॥ केषां विदो हव म्बिन्ना म्बिन्ना ग्रीवास्तथा यत्र
मिवां सिद्धवन्त्येषा मन्यमन्धविदा विना ४॥ विद्विन्तज्ज्या
स्यपत्र ये तु वृद्धा म्हासूया ४॥ एकदा कृत्वि च वृद्धा ४ कश्चिद
यो द्विधा कृता ४॥ किन्नेयिवाभ्यामिवसि पतिता ४ पुननृत्ति

२४

ता ४। कर्वधायुधर्द्ध्या गृहीतयवसा युध ४॥ ननु उग्रयव
नृग युद्धुर्ध्या जयो विना ४। केवन्धमिन्नेमिवस ४ खड्गमः कृ
ष्टिपानय ४॥ मिळ मिळ मिळाषन्ता दवीमन्यमहासूया ४॥
वातिरेवधनागम (ये वसुधैव कुटुम्बकम्) ४॥ अगम्या सागवत्
गयगा रूतमहावध ४॥ सानिनीद्यामहानय ४ सद्यस्तु वि

मूत्रद्वयं मध्यमासूत्रसंन्यास्य वानभासूत्रवाजिनीं ॥ कर्णन
 तन्महासंन्याससूत्रादीं तथाधिकं ॥ निम्नं कर्णयथावद्विस्तृतं
 गदावृत्तं वर्यां सुवर्णिं लामहानाद मूत्रजन्धनकर्म ॥ श्री ॥
 ४१ गीर्वाणसंन्याससूत्रं मूत्रनिवविचिन्वति ॥ दद्याद्गोत्रं शुक्रं श्री ॥
 कृत्वा कर्णयुग्मं तथासूत्रं ॥ यथेष्टं तु दृष्ट्वा ॥ पृथग्वृष्टि ॥ २०

मूत्रादिवि ॥ ॥ गच्छति श्रीमार्कण्डेययूनालोसावर्षिकं म
 न्दं नन्दे वीमाहात्म्यं महिषासूत्रसंन्यासदध ॥ ॥ ॥
 अभिवृत्ताव ॥ निरुन्मानीकसंन्यासवलोकासूत्रं ॥ संन्या
 तीश्वर ॥ कायाश्रयीयाधूमथान्तिका ॥ सद्वीमवर्षमेव
 वर्षसमवसूत्रं ॥ यथाभग्निकर्म संन्यासवर्षमेवायं ॥ तस्य

क्लिप्ता कला दवी लीलयेव गवात्कवान् । अद्यानकुवगान् नाने य
 नावर्कै ववाजिनी । विष्कदयधनं यथा भुज्ये किं समुद्धिने
 ॥ विद्या धर्मेव गवात्कवान् । किं न धनानमामुने ॥ सद्धि न धन्या वि
 वाथा । रुता । अहमसावधि ॥ अखधाय न तादवी । स्वत्तवर्मध
 वासू ४ ॥ सिंहमाह लयवत्तन । तीक्ष्णधर्मा मूर्धनि । अज

श्री ३
 ३४

यानकुजसवा दवीमयनियगवान् । नसा ४ स्य । अ । कुज । पा । य
 यलालनयनन्दन ॥ नता । अ । गु । रु । म । ली । म । को । पा । द । व । ली । च । न । ॥
 यिकेयवततस्तु । रुदकात्यामि । को । सु । व । ॥ अ । का । ल्य । मा । नी । म । आ
 ती । व । वि । वि । म् । मि । वा । म् । वा । न् ॥ द । कु । म । दो । य । म । कु । ली । द । वी । मी । ल । म । म् । य
 त ॥ न । कु । ली । मी । म । धा । म । न । नी । र्ति । स । व । म । हा । सू । व । ॥ रु । म । म । सि । न्नी । हा । वी

यथा नहि वस्य वसूयसी ॥ अत्र गमनं न जानूय ॥ अमवस्ति दमार्द
 नः ॥ मपि मर्किसूमेः यथ देवास्तमन्विका दुर्गा ॥ इका वासिह
 गार्हमी पातयामास निःशुर्गा ॥ रन्ममर्किसूमेः निःशुर्गा ॥ दह्योको
 धसमन्विकः ॥ विक्रयं यामवः ॥ मूलं नानेक दयिमा चिन्तनम् ॥
 गतः ॥ हिंरुः ॥ समस्त्यत्यं गजकूलात्कवस्ति ॥ वासुयूधनयू

श्री ३ न
 २५

यथा ननाञ्चस्ति दमविष्मः ॥ यूधमानो न गमो वृत्तस्यान्ना गम
 हागमो ॥ ययूधमनिर्हयक्षी प्रहायेव निदावृत्ते ॥ गताविष्म
 ल्यमस्त्यत्यं निपत्य वमृगमविष्मः ॥ कवप्रहायेव निपत्य वमृगमविष्म
 पृथक्करी ॥ उदग्रयवः ॥ दद्या मिलावृत्तादिहिर्गनः ॥ दन्तम
 स्तिरुल्ले ॥ ग्येव कनाल्यनिपातितः ॥ दवीकुक्षागदायमे ॥ य

खूब कुलु मही नल ॥ भृंग स्या यव नानु च शि क य च न ना द व
 ॥ व ग र म ध वि कु लु म ही न स्य य मी र्य न ॥ ली गु ल ना रु न श्रि
 ॥ ४ प्ला व या मा स सर्व न ॥ धू न भृंग वि रि ना श्र ख द्यु ख लु य य र्ध ना ॥ ५
 ॥ सा नि ला क ॥ ४ म न ॥ ५ नि य दु र्न र मा य ला ॥ ४ न्ति को ध र मा धी
 न मा य न र्क म हा सू र्य ॥ ४ दृ ष्टा सा व छि को को र्प न द धा य त दा क य ॥

सा कि द्या न स्य वे य मी न स्य व न्ध म हा सू र्य ॥ न त्या ज मा दि र्ध र्प सा पि
 व द्वा म हा मृ ॥ ४ ॥ न न ॥ ४ सि र्हा रा व र म ॥ ४ या व रु स्या न्ति को मि र ॥ ४
 न लि ता व ल्प रू प ॥ ४ र क म या नि व दृ ॥ ४ न ॥ ४ न ग यो गु य र्ध र्प द वी सि र्ध
 द या य के ॥ ४ ॥ न र्द न च र्म ना सा र्ध ॥ न न ॥ ४ मा र्द न म हा ग ज ॥ ४ क य र्ध र
 म हा सि र्ध ॥ न र्क क र्ध ज ग र्ज य ॥ क र्ध त लु क र्ध द वी र्ध र्ध न नि व दृ

नमः ॥ नमो महासूक्त्या माहिर्मवयुनास्मिन् ॥ नयेवका
 यामासुतेलाकिसवरावर्य ॥ नमः ॥ कृष्णजगन्मातावहिकायान
 मूरुन ॥ ययोयूनःयूनःयेवजहासावृष्टालावना ॥ ननईयासून
 ॥ सायि वलवीर्यमशोद्धतः ॥ विष्णोनाश्याकृदिकय वलिकीपुति
 रुधेयान् ॥ सावतायहिकीरुन वृधुयनिगयाकने ॥ उवाचर्ममदा

इति मूयवागकलाकन ॥ ॥ दयवाय ॥ गर्जगर्जकनेमूय मथ
 यावतिवाम्यहं ॥ मेयात्वयिहममेव गर्जिष्यंतामुदवता ॥ ॥
 अषिवृवाय ॥ एवमेकासमूयत्य सावृष्टार्गमहासूय ॥ यादनाकम्य
 कः ॥ वृष्टननेनमताउयत ॥ नमः ॥ सायिवदाक्रान् रुयानिऊमूय
 रुतः ॥ अर्द्धनिकान्गवानि दयावीर्यनसंवृत्तः ॥ अर्द्धनिकान्ग

वासी सुखमाना महासूत्र ॥ तयो महासिमा देया गिरिस्थिता
 नियोगिता ॥ तता हारा कर्मसर्वं देहमेव न नामागतं ॥ पुष्ट्य
 के यवजगत् ॥ सकला देवता गणा ॥ सुखवृक्षास्तथा देवी तददि
 योर्महर्षिणि ॥ अगुर्नन्धर्वय तथा ननु उच्यते यथा गणा ॥ ॥
 ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्धिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये

श्रीदुर्गा
 ४७

दिवा सवध ॥ ॥ ॥ अष्विषु वाय ॥ गकादय ॥ सूत्र गणा
 निरुक्त निवीर्या कस्मिन्वात्मनि सूत्रा विदलवदया ॥ नातिदुष्ट ॥
 पुष्टति नमगिधा धर्मासा वाकि ॥ यदुर्वयूलका निमया दूदहा ॥
 ॥ ॥ देवा दुष्ट ॥ दया ये या नमिदं जगत्तम गच्छानि ॥ येष
 देव गणा मकि सूरुमूर्त्या नामान्विकामविलदेव महर्षि वृषा

कस्तूराननाऽस्मविदधामुक्तानिस्तान ॥ यस्यां यत्तावमडलं
 गवाननका, वस्त्राहवश्चनहि वक्तुमर्लवलक्षे ॥ सावधि को
 खिलजगत्प्रिया लनाय, नाभयवागुत्तरयेस्यमर्निकप्रोक्त ॥
 याभीऽस्वयं सुकृतिनाशवनखलभीऽयायात्मर्निकप्रिया
 हृदयप्रवृद्धिऽयं ह्यस्तर्निकलजनुप्रवृद्धलका, गर्त्यान

श्री ३०
 ६२

काऽस्मयप्रिया लयदविदिवर्ध ॥ किंवर्धुयामनवभूयमविन्यमे
 नक्तिभक्तिवीर्यमस्तु कयकाविरुधि, किंश्च हव्यं यविमानि
 नवाहुनामि सर्वेषु देवस्तु नदवगलोदिकम् ॥ रुद्रऽसमस्त
 जगतां विगुणायिदाय, न्नहायमस्तु विदुवादिनि वद्यायावा
 सर्वथायाखिलमिदं जगदस्तु नमस्तु ह्यस्तु नमस्तु ह्यस्तु नमस्तु
 ३० मिया

स्वमाय ॥ यथा ॥ समस्त सूत्रा समदीयान् रुक्मिण्यानि प्रक
 लम्भमवष्टुदवि ॥ स्वाहासिर्विष्टग मस्य व रुक्मिण्यु वृद्धाय
 मत्तमस्तनवजने ॥ स्वधाम ॥ यामूकि रुद्रवति चिन्ममदाव
 ताव जूयस्यसु सुनिधम लिय कत्व सात्रे ॥ मा काथि किमूनि
 शिवस्त समस्त दार्प विद्यासि साहगवनीयवमादिदवि ॥ गदोक्ति

वीर्य
 ४३

व२

कासुविमल ग्यश वा निधन मूनीथवम्य पदया ० वताश्च सात्रा
 ॥ दवीगुयी रुगंती रुवरा वधाय बालाव सर्वजगतीयवमार्कि रु
 की ॥ मधमिदवि विदिताखिल मालसावा इर्मासि इर्मा रुवसाग
 व ॥ भीवसंग ॥ श्री ४ कै ० रुविदु दथे क रुताधियासा ॥ गोत्रीत्यम
 वममिमोलि कृत्तपनिष्ठा ॥ वृषस्तुहा सममर्त्यविपू र्ववत्

विमानकाविकनकोरुमकानिकान्नी ॥ अरुहमपुद्गममाफू
षागथायिवकूविलाकसदसामहिषासूत्रेण ॥ दृष्टादुदविक
पिर्नरुकीकवालमूयकूमीकसदमकविषन्नसयथायागी
न्ममावमहिषसुदमीवचिह्नेकेजीवागहिक्कपिनान्ककदम
नन ॥ दविपसीदयवमाहवनीरुवायसुधादिनामयसिका ॥ श्रीरु
४४

यवनीकुलानिविह्नाममदधनेवयदसुभननीमन्वसैरु
विघूर्णमहिषासूत्रेण ॥ मसम्पनाजनयदधनानिगर्षागर्षा
यसौमिनरहीदतिधर्मवर्ग ॥ धन्यासुवनिहतात्मजहृष्ट
दात्रोयेषासिदात्यदयदाहवनीयुसन्नी ॥ धम्मानिदविपकलानि
सदेवकर्माधेत्वाहृष्टपुमिदिनैहकूनीकवागि ॥ सुर्वयेया

नित्य नमः। श्रवणीयसादा। लोकाग्रययिरुल्लदाननूयविभन ॥ इ
 (नमः) नारायणसितीतिम। मेघजन्म। १ स्वर्ग १ म् नमः नमः नमः नमः
 मुर्ताददासि। दोविद्रुइ १ यवयुयलविनिका लदन्नासर्वापकाव
 कवधायसदाद्विहा। परिहर्तुर्जगद्विहर्तुस्त्वयि नमः कर्तुं
 नाम नमः कायविनाययाय। सर्वममृत्समधिगम्यादिवययालु

मत्स्यमिन्नमहिनान्विनिहंसिदवि ॥ दृष्ट्वैवर्किनरवनीयक
 वातिरुत्तमसर्वात्तवानविषयत्पुहि। क्षयिमर्त्तु। लाकात्युयात्तु
 विषयापिदिमस्मृयना। नृत्तमनिहंसिदविममृदिममृसाधी ॥ य
 अयुक्तानिकवविह्वनमस्तु। था। १ गे १ गे लायकात्तिनिवह्वन
 (म) स्रवाधीयन्नागमाविलयमगुमदिन्द्रवधुयाग्नानननन

विला कयनी नद तृण ॥ इवृल्लु वृल्लु मम न मवद विमील नृपत
 दविचिन्त्य मनुज्य मन्ये ॥ यी यन्त्रे हन्तु हन्त द वपना क्रमो ना वै
 विष्टपियु कटिते वद याल्य यत्क ॥ केनाये मा रयु नस्य युवा कम
 स्य नृपये म नृय का र्यति ला विकृ न विरु कृ पातम वनिष्ट न
 ता वदृष्टा ल्यथ वद विव नदु वद रुययि ॥ शे लोक म नद वि

श्रीश्री
 ४५

लीविपुना मभन गार्ग ल्या मम व मूर्धनि मयि हत्या नीना दिव
 विपु गल्लय मय पातु मेत्ता क न न द म ना विरु व न मरु ॥
 मूलन यादि ना दि वि पाहि म्ब न न वा मि के य ध्वा खन न न ४
 पाहि वा य शानि स्वन न य ॥ श्री वा न कृ प नी या के य छि के न
 क द कि (६) ल्या म न ना म मूलस्य उरु न स्या त थ य वि वा म

न्यामि यानि वृषाणि तु लाक विच वनि म । यानि वा ल्यर्थ धा यानि
 मे व का ला र्थ थु वि । ख न ग ल ग दा दी नि यानि वा क्रो वि म मि क
 । क व य ल व र्म गी नि मे व स्मा न क स र्व न ४ ॥ ॥ म पि वृ वा य न प र्व
 सु ग । स र्वे दि थो ४ क म मे न न न । रु वे ४ ॥ अ र्चि ता ज ग मां ध मी न
 थ गी ध नू ल प ने ४ ॥ र क्ता म म र्के सि द । मे दि थो र्ध ये सु धू पि ता ।

॥ ३ ॥
 यो रु य सा द स मूर्खी । स म स्ता नु धी ना नू न ॥ ॥ द द्य वा न ॥ वि य
 ना नि द म ॥ ४ स र्व य द स्मे का रि वां कि र्ता । द दा मा रु म नी पी त्या क
 वे व रि ४ स य जि ना ॥ ॥ द वा डु व ॥ रु ग व त्या क र्ता स र्व न कि
 सि द व मि श्र ण । य द य नि द न ४ मे रु व स्मा क म रि वा स र्व ४ ॥
 यदि वा पि व वा द य ल्हा या स्मा क म रु म्भ वि । स स्ता म र्म स्त ना र्थ

ॐ ह्रीं श्रीं ॥ यत्र मायदः ॥ यत्र मर्त्यः ॥ कवेः त्रिभिः स्त्रीः ॥ ह्यः ॥
मलाननेन ॥ कस्य विलुब्धिविशेषः ॥ नदायादिभिर्यदा ॥ ८८ ॥
संयुक्तं नालं ॥ तव ॥ ८९ ॥ सर्वदोषिकः ॥ ९० ॥ मयि न वाव ॥ ९१ ॥
मिथुनादिना देवेर्जगता ॥ ९२ ॥ तथैव काले ॥ ९३ ॥
वह्निना कर्हि नानुप ॥ ९४ ॥ तत्कथितं ह्यसंख्यं ॥ ९५ ॥

[illegible]

कादिसुति १॥ ॥ ॐ अस्मिन्नीसक मरि काउह वच विज
स्य न्दसपि व नू द्द व न्द ४ थी मो लो स व स्व ती द व ता सी मा म कि
अम वी वी जं सूर्य न त्वं सर्व क म म म ना र्थ मे सी ह रु स पो ह्य र्थ म
पयि निया ग ४॥ ॥ म पि नू वा व रा पु वा शु क्क नि शु क्क र्था म न
वा र्था म वी ज न ४॥ ले ला र्थ य ह रा ग म थ द न म द व लो य या नू ४॥

ता व व ह र्थो नां न द्द द धि का र्थ न (थे न्द वं १ को व व म थ या न्थ के २
को न व नू दी स्ये व ॥ ता व व प व न छि के २ क उ र्व द्वि क र्म च ॥ न ता
द वा वि नि र्दू ना २ स व ४ १ ४ य वा जि ना ४ ॥ द ता धि का वा छि द
मी स्ता र्था स र्वे नि वा द ता ४ ॥ म हा म वा र्था नां द वी स र्म व न न्थ य
वा जि ना ॥ न या स्ता र्था द ता य थ य ह र्म ता वि ना ४ ॥ व

नानाभयिष्यामि, तत्कृष्णाय नमः ॥ १ ॥ नृति कृत्वा मतिदिव
हिमवर्त्तनं गगनं ॥ २ ॥ अम्भुतुल्यं तन्मा देवी, विष्णुमायां पदुषु व
॥ ३ ॥ ॥ देवा उचुः ॥ नमो देव्यै महादेव्यै मिवायै सततं नमः ॥
नमः प्रकृत्यै तदायै नियतायै धर्मिणी ॥ ४ ॥ नमो देव्यै नमो
नित्यायै ॥ ५ ॥ नमो देव्यै नमो नमः ॥ ६ ॥ नमो देव्यै नमो नमः ॥ ७ ॥

श्रीदेवी
ॐ

सुखायै सततं नमः ॥ ८ ॥ कल्याणायै सततं नमः ॥ ९ ॥ सिद्धायै सततं नमः ॥ १० ॥
नमः ॥ ११ ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ १२ ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ १३ ॥
इत्युक्तं ॥ १४ ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ १५ ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ १६ ॥
नमो देव्यै सततं नमः ॥ १७ ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ १८ ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ १९ ॥
नमो देव्यै सततं नमः ॥ २० ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ २१ ॥ नमो देव्यै सततं नमः ॥ २२ ॥

षु विष्णुमायति श्रद्धिता । नमस्तुते नमस्तुते नमस्तुते न
मानमः ॥ या देवी सर्वरूपेषु यतनस्यति धीयते नमस्तुते
नमस्तुते नमस्तुते नमानमः ॥ या देवी सर्वरूपेषु वृद्धिं वृद्धिं
दीर्घां कृता नमस्तुते नमानमस्तुते नमस्तुते नमानमः ॥ या दे
वी सर्वरूपेषु निजा वृद्धिं दीर्घां कृता । नमस्तुते नमस्तुते ॥ ७१ ॥

नमस्तुते नमानमः ॥ या देवी सर्वरूपेषु कृता वृद्धिं दीर्घां कृता
। नमस्तुते नमस्तुते नमस्तुते नमानमः ॥ या देवी सर्वरूपेषु
षु कृता वृद्धिं दीर्घां कृता । नमस्तुते नमस्तुते नमस्तुते न
मानमः ॥ या देवी सर्वरूपेषु मां कृता वृद्धिं दीर्घां कृता । नमस्तुते
नमस्तुते नमस्तुते नमानमः ॥ या देवी सर्वरूपेषु हृष्टा

नमः कान्तिवृषदीर्घलिता । नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं
नमो नमः ॥ यादवीसर्वरुतषु लक्ष्मीवृषदीर्घलिता ॥
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ यादवीसर्वरु
तषु वृत्तिवृषदीर्घलिता । नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं गीतम्
नमो नमः यादवीसर्वरुतषु स्मृतिवृषदीर्घलिता । नमः ॥ ३

स्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ यादवीसर्वरुतषु
धृतिवृषदीर्घलिता । नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो
नमः ॥ यादवीसर्वरुतषु दयावृषदीर्घलिता । नमस्तु
भ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ यादवीसर्वरुतषु
उद्विग्नवृषदीर्घलिता । नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो

नमः॥ यादवीसर्वरुतम् यद्विषयदीर्घाङ्गिता नमस्तु नमस्तु
 स्ते नमस्तु नमो नमः॥ यादवीसर्वरुतम् माद्विषयदीर्घाङ्गिता
 नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमो नमः॥ यादवीसर्वरुतम्
 याद्विषयदीर्घाङ्गिता नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमो नमः॥
 नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमो नमः॥ यादवीसर्वरुतम्
 याद्विषयदीर्घाङ्गिता नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमो नमः॥
 नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमो नमः॥ यादवीसर्वरुतम्
 याद्विषयदीर्घाङ्गिता नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमो नमः॥

[illegible]

ना न लक्ष्मण भव ह निनः ॥ सर्वा यदा रं कि विन प्रमूर्ति सि ॥ १ ॥
 अथि नू वा व ॥ अथं सु या दि यू कानां द वानां नू या वी नी ॥ स उ
 म स्या य यो भा य ॥ जा क्क वा नृ य न न्द न ॥ स उ वी हानं सु न न्द
 क्क र्क व कि ल्प य न्द न ॥ म वी व को ग न्द स्या ॥ स म्प क्क ता व वी
 वि वा ॥ स र्ग म भे न कि य न्द ॥ गु क्क दे ल्प नि यो क्क र्क ॥ १ ॥ द व ॥ स म

श्री ३
 ७७

स ॥ स म्प ॥ नि शुं क्क न य वा जि र्क ॥ म वी व को ग न्द स्या ॥ द व
 ल्पानि ॥ स क्क ता नि का ॥ को गि की नि स म्प क्क र्क न भा ला क ष्म गी य
 न ॥ न स्यां वि नि र्ग ना य ल्प क्क स क्क ता यि पा वी नी ॥ कालि क नि स
 मा र्वा ना हि म ॥ स क्क क्क ता यो ॥ न र्क वि का प र्क वृ य वि क्क र्क
 स म्प नी ह र्क ॥ द द र्क यो ल्प मू ल्प य ॥ स क्क र्क नि शुं क्क य ॥ १ ॥ ता

श्यामुक्तायवाख्याता अनीवसुमना रुवा । कायाशुक्लीमलाय
 उरासयनीदिमायलं ॥ नैवनादृक्काविदूषं दृष्टं केनविदुः
 मीरुयमाकायशोधवी गृहमायामुग्रव ॥ श्रीवत्समनिय
 वगी आनयनीदिमल्लिषा । सातुनिष्ठनिदयेन्दु गांरुवा ॥ श्रीवत्स
 लुक्मर्हति ॥ यानिवत्तानिमनेया गजाग्धादीनिर्वेषसा ॥

श्रीवत्स
 ॥ ५ ॥

लोका उसमस्तानि सांप्रतानि कुरु ॥ जरा वरु ४ समानी
 भा । गजवत्समयवन्द गान् । याविजाननवृथ । यं गयेवाञ्च ४
 वारुय ४ ॥ विमानं हंसमयूक भक्तलिष्ठनिर्गम ॥ जलरुन
 मिहानीर्ग यदासीद्वधमाहुर्ग ॥ निधिवचमहापद्म ४ सम
 नीतीधनं गवान् । किंजल्किनीददोवाचि नालिमन्त्रानयक

३६
 दाग कूटुम्भशाग निगुशां वामलासूय ४॥ मांजित्वा किं विप्रधाग
 यार्णिगृजा उर्मेलद्य ॥ ॥ इम उवाच ॥ अवलिफा सिमेवत्
 दविबुहिमसागुत ४॥ लाक ४॥ मांजिष्ठ ४॥ गुरुं सनिगुं रुया
 ४॥ अन्येषां मपि देहानां सद्यं दयानवेयूधि ४॥ निमन्निर्ममूय
 दवि किंपून ४॥ स्त्रीत्वमकि का ॥ ॥ नृन्दाशा ४॥ सकला दवा सुसूयः

धीनसंयुगं शुभादीनां कथं भवति स्तुपयात्यसि संमुखं ॥ सात
 गच्छ मयैवाका पाम्यं मुनिमुं मया ॥ ४१ ॥ कश्चि कर्षणे निहृत्तं
 प्रवामागमिष्यति ॥ ॥ देववाचं ॥ एवमनद्वली मुक्ता निमु
 म्भुक्षति वीर्यवान् ॥ किं करोमि पुनित्स्वम् यदनालायिता य
 य ॥ सर्वं गच्छ मया कृतं यदगत्तुर्वनादृतं ॥ नदाय को सुखं द

मंस्तितां ॥ अग्रादावे ॥ यथाहीति मूलं च रनिर्मुक्तयो ॥ नचस्यी
 यायंरवतीमरुर्लवमधेयति ॥ नभावलान्नयाम्यपकंगक
 मधेविहृल्लो ॥ ॥ दयवाय ॥ देह्यमवधेयहिता वलवान्
 लसंवृत् ॥ वलान्नयसिमाभर्व नरु ॥ किंनकवाम्यहं ॥
 अथिभूवाय ॥ ॥ वृत्तक ॥ भाव्यधवला मसुमोधुसलीय

श्रीरमा
 ४२

न ॥ हंकाथोवर्तनसम सायकावाचिका नरु ॥ अथक्रुद्धंम
 हासेन्य मसुवानांनथाम्बिकां ॥ ववर्षसायकंस्त्रीकु सथामाकि
 यवम्यारथे ॥ नकाधुनसठ ॥ कोपा लुत्तानादंस्त्रीवर्व ॥ यवा
 नासुमसनायां सिहादया ॥ खवाहन ॥ कांथिलक वपुहाव
 धं देहानोष्टेनवापमान् ॥ अक्रोत्तायाधवधन्या ऊरधानागु

महासूनाम् ॥ कर्षादित्याद्यामास नरवेऽकाष्टानिकसमी ॥ न
थातलपुलायदा गिर्षासिक्तुनवानुष्टथक ॥ विद्विन्नवाकूमि
वसुऽकृतालेनतथायव ॥ यथोववृधिर्यकोष्टा दशवर्धन
कसेवऽ ॥ करलनतदलसर्व कयनीनमहात्मना ॥ कनकसवि
धादद्या वाहननाहिकोपिना ॥ यत्त्वानमसर्वदद्या निहर्त

श्रीदत्ता
३३

धूमलाचनं ॥ वलंचकयिर्नकुत्सं दवीकसविधानन ॥ वृका
येदेत्याधियुनि ॥ शुभऽयस्त्रुविनाधयऽ ॥ आहापुयामासच
मी ॥ वसुमऽमहासमी ॥ रुक्मरुक्मवले चरुले ॥ यवि
वाविमी ॥ नगुगकुनगलाय मासमानीयनीलघु ॥ कामेवाक
ववस्त्रावा यदिवऽसंगयोयुधिऽनदा ॥ मघायुधेसर्व वसुने

३४ मृत्तानिष्ठमृत्तानि

[illegible]

नवग्रहाय नमः ॥ ददुःखं कृष्णं नमो देवी नीलकण्ठाय वल्लभाय ॥
सिंहस्थाय विमलस्य भृंगमहानिकाशेन ॥ भद्रं कुरुतां समा
ननु मय्यर्चय कुरुतां ॥ अकुरुतां पापिधवा कथं न
समीपम् ॥ १ ॥ तत्तु १ कायं च कायं च न विदुः काननं न नृपती ॥
कोपनं वास्यावदन् समीपं तु मरुतं न ॥ अकुरुतां कुरुतां

हृत्मा ललाट हृत्मा ललाट हृत्मा ललाट हृत्मा ललाट हृत्मा ललाट
सिंघागिनी ॥ विविध वस्त्रां गंधा न रमाला विह्वला ॥ छी
पिचर्म पशीधाना शुक्लमांसानि रजवा ॥ अति विलोचन वदना
जिह्वा ललनशीषध ॥ निमग्न वक्र नयना नादाय विनदिशे
त्वा ॥ सार्वे गनो रिपतिता घातयन्ती महासूतान् ॥ मेघात्तु
मूर

सूत्रात्री ॥ मरु कयततद्वल ॥ पार्श्वि ग्रहांकुमरादि आधयष्टी
समन्वितान् ॥ समादायेक हस्तं न मुखविक्रपावर्ध ॥ नथे
वशां कंदु रगे ॥ तथं सावधिना सह ॥ निष्क्रिय वक्र दगने ॥ अर्धयत्न
मिह वर्व ॥ ७ कंज ग्रह कंज ॥ यो वा यामथ राय व ॥ पादना कुच
यवान्य मूरसा न्यमपाथ ॥ ७ कंज कानि वगस्तानि ॥ महासूतानि

थासुने ४। मुखेन जगत्परा दूषादगमेर्मथितान्यपि ॥ वलिनी नदलं
सर्वं मसुवाधो माहात्मनी ॥ ममदीरु कयद्यान्या नन्याश्च नउयह
दो ॥ अस्ति नानि रुता ४ कचित् कविलवर्द्धा गतातिता ॥ अर्धविना
ममसुवादनाग्रारिह नास्तथा ॥ कालेन नदलं सर्वं मसुवाधो नि
यातिता ॥ दृष्ट्वा च अस्ति दूजोव गां कालीमतिदीप्यता ॥ गववधे ७४

माहात्म्ये श्रीमातां नामदासुव ४। कादयामासवकेय मधुकि
ये ४ सहस्रम ४ ॥ तानि वक्राधन कानि विगमानानि तन्मूर्ख ॥ वकु
र्यथा कविम्वानि सूवह निघभादये ॥ तमाजुहासातिदूषा सीम
सेववधोदिनी ॥ काली कबालवक्रान् ईदमदगमाहाला ॥ उक्ता
यवमहासिंहं दवीवधुमधवत ॥ गृहीत्वा वास्यकामयु भिव

कनासिनादिनन् ॥ अथमूर्ध्नाया धावर्णा दृष्टावर्णनियानिर्ण
 नमयायागयहूमो साव अरिहर्गवृषा ॥ रुत (मर्ष) नन ४ सेन्य
 दृष्टावर्णनियानिर्ण ॥ मूर्ध्नायै मर्धवीर्य दि (मर्ष) क रयां दुर्व ॥ श्री ३ न
 निव अर्धस्य कालीव गृहीत्या मूर्ध्नायै वव ॥ वाह पु वर्धु ह दास
 मिश्र मर्धे ह्य वर्धुका ॥ मया न वाहा प द नो वल्लु मूर्ध्नायै मर्धाय ॥ ३ न

मूर्ध्नायै मर्धयहूमो साव अरिहर्गवृषा ॥ अथमूर्ध्नाया धावर्णा दृष्टावर्णनियानिर्ण
 नमयायागयहूमो साव अरिहर्गवृषा ॥ रुत (मर्ष) नन ४ सेन्य
 दृष्टावर्णनियानिर्ण ॥ मूर्ध्नायै मर्धवीर्य दि (मर्ष) क रयां दुर्व ॥ श्री ३ न
 निव अर्धस्य कालीव गृहीत्या मूर्ध्नायै वव ॥ वाह पु वर्धु ह दास
 मिश्र मर्धे ह्य वर्धुका ॥ मया न वाहा प द नो वल्लु मूर्ध्नायै मर्धाय ॥ ३ न

मन्त्रनवद्वीमहात्म्यं यत्तु मूलवधः ॥ ॥ ॥ ॥
 अथिन्वाय ॥ यत्तु वनिहमदेत्य मूलवधविनिर्निमित्तं यत्तु लघु
 यसेन्याय कथिमद्यसूत्रं यत्तु ॥ तन् ॥ कायप्रवाची नयना ॥
 कथयतापेयान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां देव्यानामादिदमह ॥
 अथ सर्ववलेद्वेत्ता ॥ वत्तुगीतिरूपायुधा ॥ कन्युनाचरुता

ली

ली ३८
 ३८

मीति निर्वाहसुखवलेद्वेत्ता ॥ काटिवीर्यादियक्ष्मण दसुना
 धीकलानिवे ॥ मर्ककलानिधौमार्गं निर्गन्धुममाहृया ॥ का
 लकादीर्हदामोया ॥ कालकथाकथसूत्रा ॥ यद्वायसंज्ञानि
 यान्ति ॥ आहृयात्यतिनाममम ॥ अह्योह्योयासुवयति ॥ मुक्ताकन
 वग्मासुन ॥ निर्गन्धममहासैन्यः सह सर्वरुसिर्हन् ॥ आयान्तवति

काटुका गह्वरे नमस्ति श्रीषर्मा ॥ आस्तने ४ पूत्रयामास धवनी ग
गनाकर्ष ॥ कत ४ सिंहासनाद मनीव कतवान् नय ४ घट्ट
सुननना न्नादा नम्यिका वापट्ट दय ॥ धन ४ सिंहासना
ना मादापूत्रिदिद्युवा ॥ निनाद हीष ४ काली ॥ जि ४ यवि ॥ ३५
स्त्राविता नना ॥ तनिनाद मूय ४ य देत्यस्य नीय ४ दिर्ग ॥ ३६

दवीसिंहसुथ ४ काली सवा ४ यविवाविता ४ ॥ ३७ तस्मिन्नन
रुय विनामयसुवद्विष्ठा ॥ कवायामवसिंहाना मतिवीर्षव
लोन्विता ४ ॥ वक्रमेगुरुविष्ठा ॥ तथेन्दस्य वमेकय ४ ॥ मरीच
स्त्राविनि ४ कन्य ॥ तदय ४ यवि काय ४ ॥ यस्यदवत्य यद्व ॥ क
था ४ रुष ४ वाहन ॥ तद्वदवहितकृकि ॥ तस्मान्मा ४ माय ४ ॥

हंसयूकविमानाद्य साकल्यकमलं ल० आयागावक्रं ४ मं
 किं बुद्धादी सातिधीयं ॥ मोहं शरीरं वृथा वृत्तिं मूलं वृद्धं
 विधी ॥ महाहिवलेयायाका कृत्वा वृथा विरुद्धं ॥ कोमावीगं श्रीराम
 किं हस्ताव मयुत्रवृत्तं वाहना ॥ यद्वा मत्स्याय यो देहा नमिका
 गुरुवृत्ति ॥ तथैव वृत्तं वृत्तिं गतिं नृत्तं यद्विस्मिता ॥ गीतं वृत्तं ॥

गदाभर्म स्वकृत्वा लयाय यो ॥ यद्वा वाहना मउलं वृत्तं याविज
 माह वृत्तं गतिं ४ सायाय यो नृत्तं वायादीं विजगीतं ॥ नायसि
 हीनृत्तिं हस्तविजगीतं मवृत्तं ४ याका नृत्तं गदा कय किफनक
 गीतं हस्त ४ ॥ उ हस्ता नृत्तं वृत्तिं गीतं याका नृत्तं
 हस्त नयना यथ मकृत्वा लयाय ॥ गीतं ४ यद्विस्मिता ॥ श्रीराम

नादवमकिरि ४। रुन्ना नामसूत्रा ४ गीर्घ ममयीत्या हवहिकी ॥ न
तादवीमनीयसु विनि ४ कान्नातिरीवम ॥ बहिकी मकिरि वत्य
अ. मिवाभननिनादिनी ॥ सावा हधूमजडिल मीमनमयनाति
ना ॥ इतलंगकुरुगवत् पार्थर्मुनिरुनिरुथो ४ ॥ वृद्धिर्मुनीनिरु
४ ॥ दानवावमिगर्विनी ॥ यथान्यदानवा सुत युद्धाय समयहिकी ४

मोला कमिन्दो लरुमा दवा ४ सलुरु विरुज ४ ॥ यूर्यययानपातारु
यदिजीविनुमिक्कथ ॥ वलावलपोदथय रुवन्नायूद्धकीरि ४ ॥
नदागंरुगरुयलु मकिवा ४ यिमिभनव ४ ॥ यना नियुक्ता दोत्यन
नयादव्यामिव ४ स्वर्य ॥ मिवदूनीतिनीकस्मिन् रुत ४ साख्याति
मागना ॥ मपियुलावथादवा ४ सवख्यानमरुसूत्रा ४ ॥ अमयीयू

विताजम्, येन कात्यायनीकृता ॥ नतः प्रथममवाप्तुं नवमस्तु
वृष्टिः ४१ ववर्ष नृक्ष गामर्षाः कृदिदीममवाप्तयः ४१ सावतात्यदि
तान्वा नोऽपुनैव क्रयवर्ष धान ॥ विष्टदलीलया धान धनूर्मक
महर्षिः ४१ नत्याग्रतस्तथा काली गृहपातविदा वितातु ११ वदं श्रीर
गयाधितान् श्री, कूर्वन्ती यवग्रहदा ॥ कमस्तुलजलाकृप ६ १२

नवीया नृ गो जल ४१ वक्राधीना कवी कुरु न्यनय नस्तथा
वति ॥ माहृयवीति गृहलन गथा वक्राधीव कृवी ११ देह्या जेय
नको मावी, गथा न कृता कि को यना कुरुडी कलिम पातन गत
॥ माहृयदानदा ४१ यदुर्विदा विता ४ पृथ्वी मृधिनी यप्रवर्षि
४१ कुले यहा विष्टस्तदं द्योग्र कनव गल ४१ वनाहस्त ह्या

न्ययनं श्रुत्वा धनं विदामि ना ॥ न श्रेयं विदामि ना श्रुत्वा न कस्य
 नीमला सुगन्धना वसिंही च वा वाजी, नादापूरुषं दिगम्बरा ॥
 वल्लभा हलासे वसुधा ॥ मित्रं हृदि हृदि ना ॥ यत्रुष्टे पृथिवीयति
 नां क्ति श्रुत्वा दाधे सा न दा ॥ क्ति मा हृदि क्ति मर्दयन् नीमला
 सुगन्धना ॥ हृदि हृदि पायं विविधे, नैसुद्धं वा विमिनिका ॥ पत्नी

यनपना नृत्वा, देहान्माहृगमादिना न ॥ या इमं ह्याय यो क्ति
 क्षा, न कवी ऊमा सुव ॥ न कवि नृत्वा दाहमी, यन ह्यस्य गमी
 वन ॥ समुत्पन्नं मिमदिन्यां, नत्पुमान् रुदा सुव ॥ यूयूधस
 गदायानि, विन्दुगं क्ति मा सुव ॥ न नृत्वा नृत्वा स्वकं कवी
 ऊमा नृत्वा ॥ क्ति मा नृत्वा नृत्वा नृत्वा नृत्वा नृत्वा नृत्वा

मरुत रुमाथाधु सुदयास्त्य वा क्रमाः ॥ यावन् ४ पतिना
 रुसा गेवीयाड कविन्दुवः ॥ नावन् ४ पूरुषाजाना सुदीर्यव
 लविक्रमाः ॥ नवापियूयूधुसुत पूरुषावकसम्भवाः ॥ समैमा
 रुतिवह्युगमसुषानातिरीषर्ष ॥ यूनयवज्यातनकतम
 स्यमिथायदा ॥ ववाहवक पूरुषा सुतीजाना ॥ सहसुमशा ॥ १६

स ३

वैश्वीसमवेनं वक्रधरिजघानहृगदयानाठयामास
 लुडीरुमस्यम्यर ॥ वैश्वीवक्रलिनस्य वृधिवसावसम्भवे ॥
 सहस्रभाऊगद्यार्क नल्यमानेर्महाभूवे ॥ गक्राजघानको
 मावी वावाहीवहथासिनारमाहम्यवातिगूलेन वक्रवीजंम
 हासुर्व ॥ सवापिगदयादत्य ॥ सवाप्रवाहनपृथक् ॥ माहृका

पसमाविष्टा न कवीजः महासूत्र ४॥ न स्यादुक्तस्य वदुधः गच्छिगुणा
 दिशिर्दुवि ॥ यथा न्याये वेकोद्यः सुतोसं कृतं गंगासूत्रा ४॥ न स्या
 सूत्राह कः सूत्रे वसूत्रे १॥ सकलं जगत् ॥ या कमासीह मादवा र
 यमाजम् नूतनं ॥ नानिषेष्टां सुमान्दृष्टां वल्लिकायां हसन्ति वा ॥ श्रीरक्त
 उवाच कालीयामूले विस्तृतं वदनं कूटं ॥ मस्तु कृतं या न सक्तं नानु ॥ १७
 त्वं २

कविन्द्रमहासूत्रान्तरकविन्दो ४॥ यमीकृतं वक्तुं धननवनि
 ना ॥ कृतं यनीवन्तः ॥ न इत्यन्तः महासूत्रान्तरं वमेष कृतं द
 स्य ४॥ कीनवका गमिष्यति ॥ कृतमानास्तु या सा ॥ नयात्यस्य मि
 वा यत्र ॥ नृत्यका नमितादयी गूलनां हि जघानर्ग ॥ मखेन का
 लीरु गृहं न कवीजः स्यात् ॥ नानिर्ग ॥ नमो सा वा जघानाथ नदया नर

वलि की॥ न यास्यावदनाश्च ऊं न दायागालि काममि न त्या ह
न स्य बहलु व रु स आ व (मनिर्न॥ य न रु न रु द कु धी चामु छी स
य ती रु मि मू र्व म मू न ता य स्या य क पा ता नै हा सू वा सु ॥ ना य
खा दा थ वा मू छी प पी न स्य य (मनिर्न॥ द वी मू ल न व क द वा ले
। व सि हि अ दि मि ॥ ज घा न य क वी ज न चामु छी पी न (मनिर्न॥ स

श्री ५
॥

प या न म ही दृष्ट ग रु सी रु स मा रु न ॥ नी व क थ म ही पा ले व क
वी ज म रु स न ॥ न रु न रु द व मि रु ल म वा पृ स्ति द म नृ य ॥ न य मि
ह ग (म आ ता न न रु सि द्वा दा रु न ॥ ॥ ॥ ॥
रू नि श्री मा र्क छु य यू वा (म सा व हि रु क म न रु न य द वी मा हा स्य
व क वी ज व ध ॥ ॥ ॥ ॥ वा आ वा व ॥ वि वि रु मि द मा स्या

तं रत्नं कुरु वनामममदद्यात्थविगमाहात्म्यं, वक्रवीजवधामिह ॥
 हय (कु) योम्यहं (आ) र्थं, वक्रवीजनिघानिग ॥ यका वलुभायन
 मनिमुम्हयानिकायन ॥ ॥ अघि नूवाय ॥ यका वकायमशु
 लं, वक्रवीजनिघानिग ॥ मुक्तासूत्रानिमुम्हयं रुगं वन्यधूवाह ॥
 धवा हन्यमानं महासैन्यं, विलाकोमर्षमूखरुन ॥ अखधवनि ॥

व३

मुम्हायि मूरययासु वसनया रनसायनकथापृष्ट, यार्थयाभ्य
 महासूत्रा ॥ सन्दष्टीष्टयूटा ॥ कुक्षो रुन्दववीमूपाययूठा ॥
 जगाममहावीर्य ॥ मुम्हायिस्वलेष्टन ॥ निरुन्दवष्टिकीकोया ॥
 लायूष्टुनाहुरिशा ननायूद्धमनीवासी, देया मुम्हनिमुम्ह
 या ॥ गववर्षमनीवाग्यं मयया विववर्षना ॥ विरुदाकांष्टि

नौलाखां चलि काखनवां देव ॥ नाउ या मा स्यां न भू मकु
धेव सुत्र मय्यां निमुक्ता निमित्तं वर्यं चर्मया दाय सुवर्त ॥ अना
उय नमस्त्रि सिंहं दयाया रुन मूलमं गोठि कवा रुन देवी कुव
यमा सि मूलमं निमुक्ता स्या सुविदुद चर्मवा य सुवर्तक श्री ५ म
कि न व म मि ख र न व ग कि वि क य र सा सु व ॥ नाम य स ॥ १८

विधा वक्र चक्र लं हि मया गतां र क। या धा मा नि मुक्ता थ म
लं ज अ रु दान व ॥ आ या तं म दि या त न देवी न आ या वु र्मु य म
आ वि धा थ ग दा सा पि वि दू य व लि कां पु ति ॥ सा पि दे वा कि
गूलन, ति ना र स्मे त्वा मा ग ता रा तं न ४ य व सु रु र्क न मा या न
दे ह्य र्ग ग व ॥ आ रु ह य दे वी वा लो धे च या न य त रु त ल ॥ त सि

कायदा ॥ तदा जयत्यसिद्धिर्न दवे वा का भर्मसिद्धिर्न ॥ शुभं न गत्य
यामकिर्मका कालातिनीषध ॥ अमा नीवकि कूठा सा निवका
महा लया ॥ सिंह नादन शुभं स्या ॥ आर्य लोक नया कर्म निघो गनि ॥
सुभा धीनी ॥ उक्तवानवनीयत ॥ शुभं मूर्का शुभा नंदवी शुभं सक्तु ॥
हितां कृता न ॥ विष्णु दस्य गीतं पूजे ॥ गीत ॥ अथ सहस्रं ॥ ततः ॥ ६०

वह्नि का कृष्ण ॥ गूल नाति जघान न ॥ सतदा हि दगा रुमी मूर्च्छिता
नियवा न ॥ ततो नि शुभं ॥ सीषा यवन नामा रु काम्यक ॥ अज
घान गीतं दवी ॥ काली किमविद्यं कथं ॥ पुनश्च कृत्वा वा कृता मयूतं द
नूजय ॥ ॥ वक्रा यूरध नदि ति ज कृत्वा दया मास वह्नि का ॥ ततो
रुगवती कृष्ण इर्म इर्म हि ना गिनी ॥ विष्णु दगा निवक्रानि ॥ स

मंत्रे ४ मायकां श्रेतानां नृकमानि मुक्तावागन गदामादाय वल्लिका
 अजस्रधवतवै रुन्तु देवभना समारुह ४ नस्यापकमप्रवायुग
 दात्रियुदयलिका ॥ खल्लनमित्तधवध सचगूलसमादद ॥ ग
 लहसंतमायानं निगुम्भममार्दनं ॥ हृदिवेयो धगूलन व ॥ श्री ५
 गाविद्धनयलिका ॥ हिनस्यतस्यगूनन हृदयान्निसुतोयेव ॥ ४

४ ॥ महावला महावीर्य स्मिष्ठितियूयुधावदन ॥ तस्य नि ४ काममाद
 वी पुहस्यस्यनवरुत ॥ मित्रश्रियुदयव खल्लन ततोसावपक
 वि ॥ तत ४ सिद्धम्यगोद्योग्य दक्षु कुलुमिवाधवान् ॥ अस्मां कां
 थाकाली मित्रइतीतथायवान् ॥ कोमात्री गकिनिहिना ४ कवि
 ननुमहासूत्रा ॥ वक्तापीमरुपूतन गायनान्यनिवा कृता ॥

[illegible]

ननु यदवीमाह शानिमुक्त्वधः ॥ ॥ ॥ अत्रिद्वयम्
॥ निमुक्त्वा निहर्तृदृष्ट्वा शान्तिं पादोत्तमिर्ग ॥ हन्यमानं वलं चैव मु
क्त्वा शुकुब्धो वीर्यवधः ॥ वलावलं यादृशं लोमादूर्ध्वं गच्छमावहः
अन्तासां च लमावित्थं यत्प्रसक्तं तिमोनिनी ॥ ॥ यद्वयम् ॥
ननु वाहं जगत्पुनः द्वितीया काममायया ॥ चरन्तीतादृशमथा

व. दि. ग. न्यामद्विरुक्तयः ॥ ॥ अष्टिबुवाच ॥ नमः ॥ समस्तकाकाद
था. बुक्तादीयमूर्त्वालयः ॥ नमः ॥ दयाकर्मो जगत्प्रवर्तकः ॥ सिद्धिदोमि
का ॥ ॥ दयुवाच ॥ अहं विरुद्धावक्रुतिविह्वयैर्यदास्मिता ॥ श्रीगुरु
नमः ॥ हर्ममयैकेव. निष्ठाया जालिका ॥ नमः ॥ ॥ अष्टिबुवाच ॥ श्रीगुरु
नमः ॥ पववृत्तयुद्धं दया ॥ शुभं ह्यसौ श्रुयो ॥ यथा सर्वदवाना ॥ ८२

मस्तुतात्पर्यदा मूर्ध्नि ॥ गववर्ष ॥ मित्रं ॥ मस्तु. सुधाम् ॥ येवदावृत्तः ॥
तथा ॥ यद्वमस्तु ह्यय ॥ सर्वला. करयं कर्तुं ॥ दिव्यान्मस्तु निमग्नः ॥
मूमवयान्मस्तु धाम्नि का ॥ वरुणः ॥ निधेयः ॥ सुत्पत्नीद्यानकर्तुं
हि ॥ मस्तु निमग्नः ॥ नि. दिव्यानि यत्र मस्तु ॥ वरुणः ॥ सीत
येवायं. हंकावाचावधमिहि ॥ नमः ॥ मवमर्तेर्दयी. ना. कदायत

मास ४॥ सायितकृपितादवी धनूश्चिद्वदयषुति ४॥ किन्न
 धनूश्चिदेत्यल्लसभोगकिमथादरु ॥ चिद्वददेवीयकुव
 नामयस्यंकवलिना ॥ १॥ ४॥ खमूपादाय मंतचल्ले
 लानमन ॥ अत्यधवकुदादवी देव्यानामधियंथव ४॥ श्री ३॥
 सायितकृपितादवी धनूश्चिद्वदयल्लिका ॥ धनूश्चिद्वदयल्लिका ४॥ मि ४॥

वीर्योश्चर्मचार्ककयामल ॥ रुमाश्च ४॥ सनदादेत्य ४॥ किन्नधला
 विसावथि ४॥ अग्रमूकनैधोत्र मविकानिधनोयुत ४॥ चिद्व
 दायमनस्य मूकनैनिमित्त ४॥ मंत्र ४॥ तथयिमाश्चधवकु
 मष्टिसूच्यवंगकोत्तसमूहिपातयामास रुदयदेत्ययुग
 व ४॥ देवोस्तथापिसादवी तल्लेनावस्यगुय ४॥ तल्लेनावस्य

शिरुगां निपयाकमहीतले ॥ सद्वृत्तमात्र ४ सद्वृत्ता पुनववगत्था
कित ४ ॥ उत्पत्त्यववगृह्योच्च द्रव्यगगनमाहित ४ ॥ नेशापिसा
निवाधाय युयुधननवल्लिका ॥ निरुद्धवतदोदह्य ग्रन्थिकाव
पवस्यवववकृदु ४ पुथर्मयुद्ध मूनिविस्मयकावक ॥ ततो निरु
द्धस्त्रिवं कलातनामिकासरु ४ उत्पद्युक्तमयामास चिकपध ४ ७

वहीतले ॥ सक्रिफाधवर्णीयाया मूषितुयमावगित ४ ॥ मूषध
वतइसत्ता चळिका निधनकया ॥ तमायीतततादवी सर्वदेहजन
म्वर् ४ ॥ जगत्यायातया मास शिला मूलनवकसि ॥ सगतासू ४ पयाता
ध्या दवी मूलोयविकृत ४ ॥ वावयत्तकलीपृथ्वी साक्षिपसिपवर्ता
॥ ततः पुसन्नेमविल हततस्मिन्नुवात्मनि ४ ॥ जगन्सुखा सुमतीवा

भाषितलस्यसंसीदविभ्यम्विपादिविभ्यं स्वमीश्वरीदविदवायव
 स्यात्तन्मूर्धोवहताजगत्सुभका महीश्वरूपशयनः ॥ स्तितासि
 ॥ अर्पास्वयंयस्तितायात्तयेन दायायार्तकस्तमर्तधुमीय ॥
 लवेपुवीमकिवननवीया विभ्यसवीर्जपवमासिमायासमादि
 तदविसमस्तमग लवेपुसंनारुविमूकिरुडु ॥ विद्याः समस्तान्

श्रीराम
 ५०

वदविशदाः ॥ स्ति यः समस्तः ॥ सकलाजगत्सु ॥ लयेकयापूनिनमव
 येन ॥ कोरुति ॥ स्ति वापवापवाकिः ॥ सर्वस्तुतायदादवी ॥ स्वर्गमू
 कियदायिनी ॥ लस्तुतास्तुतयकावा ॥ स्वस्तुयवभाकयः ॥ सर्वस्यव
 द्विष्टयस ॥ जनस्येनदिर्गस्तिता ॥ स्वर्गविवर्तददविनायायगिने
 भास्तुन ॥ कलाकायादिनृपेण ॥ पवितामपुनायिनि ॥ विदवायापव

मोगक नायायतिनभासुत ॥ सर्वममलममिन् ॥ निवसर्वार्थसाधि
क ॥ ममलममिन् ॥ नायायतिनभासुत ॥ लक्ष्मिनिविनाम
ना ॥ मकिरुमसनातनि ॥ गुणमययुधमय ॥ नायायतिनभासुत ॥
ममलममदीनार्क ॥ पविनामययय ॥ सर्वल्लिखयय ॥ नायाय
तिनभासुत ॥ हंसयूकविमानसु ॥ वक्रादीययय ॥ कोमामु ॥ ८८

कनिकयय ॥ नायायतिनभासुत ॥ शिखलवज्रदिधय ॥ महावयय
हिनि ॥ माहयय ॥ नायायतिनभासुत ॥ मयूरकूटवय ॥ महा
मकिधयनय ॥ कोमावीयय ॥ नायायतिनभासुत ॥ मयूरकूटवय
माह ॥ गृहीतयय ॥ पुष्टीदय ॥ नायायतिनभासुत ॥ गृही
तायमहायय ॥ दंष्ट्रायय ॥ वयय ॥ नायायतिनभा

सुत ॥ नृसिंह रूपे (लोय) हनुं देहानुक्रमाय महेला कजावसदि न
नायायधिनभासुन ॥ किरीटिनिमहावर्जं सरुधनयनाकलं । वृक्षयोध
हवयेति नायायधिनभासुन ॥ मित्रदूतीस्वरूपे हनुं देहानुक्रमाय
॥ धावययमहावाव नायायधिनभासुन ॥ दंडाकमालवदनं मित्राम
लाविरुष (लोय) मूलुमूलुमथनं नायायधिनभासुन ॥ ललितलंकम ४९

लाविशं यक्षयुष्टिस्त्रधध्वं महाराजिमहाविशं नायायधिनभासुन
॥ मेधस्रवस्तितिवयं हतिवाधविनामसि ॥ नीयकस्यपुत्रीदम नायाय
धिनभासुन ॥ सर्वतः पाणिपादानं सर्वभाकिमिनामूरि ॥ सर्वतः
वक्ष्यामि नायायधिनभासुन ॥ सर्वस्वरूपसर्वभा सर्वभाकि समन्वित
॥ रुयस्त्राहिनादवि इत्यदविनभासुन ॥ यत्कुरुवदनं मोमं लावन

प्रयेख्येति ॥ पाठन ॥ सर्वहीति ॥ कात्यायननिर्मासुग ॥ बाला कनालम
 ल्यु म (ग) वासुत्र सुदनी ॥ कि गूली पाठनाहीत ॥ कुड कालिनमासुग ॥ हि
 नस्त्रिये लकजांसि स्वननायूर्य पाऊग ॥ साद्यन्ध पाठनादवि पा
 यस्थान ॥ सुतानिच ॥ असूया सुग्वेसाय क ॥ चञ्चिक क क वा कल ॥ १
 मुलायवमोहवदु ॥ बलिकेला ननावेय ॥ वागन (ग) वा नपहंसिउ ॥ २०

छा, नृस्यउकामान्मकलान्ही द्यन्त ॥ लामाप्रितानानविपन्नवाधाला
 माप्रिताकाशेयगायुयाकि ॥ १०० ॥ कदनीलयाय धर्मद्विषां
 विमहासुगाध ॥ १०१ ॥ नृयेवनकेर्वरुधालमूर्ति कृतान्त्रिक त ॥ १०२ ॥ युक्तवाति
 कान्या ॥ १०३ ॥ विद्यासूगमस्तु विवकदीप ॥ १०४ ॥ शोधूतकेशूवकालेदना ॥ १०५ ॥
 मत्वगर्हतिमहात्माकात्र विजामयत्येतदतीवविश्वम् ॥ १०६ ॥ वजीसिय

शत्रुविषांश्च नाशयन्ता वया दस्यु वलानियन्तु दावा मया यदुक्तं तथैव
 मध्यं कुरु क्लृप्तं पविष्यामि विष्णुं ॥ विष्णुं पविष्यामि विष्णुं
 शक्तिं का धारयसीति विष्णुं ॥ विष्णुं मवद्या रुवनी रुवन्ति विष्णुं ध्याये
 त्ययि कुरु क्लृप्तं ॥ दविपसीद पविष्यालयना विहीनं निर्णयथास
 ववध दधुने वस्यथा पापानि सर्वजगतां पुन मन्त्रया सु उत्पन्नया क

जनितं च मरु पस्यन्तु ॥ पक्षिनां पसीद त्वं दवि विष्णुं कुरु विष्णुं
 कुरु लायका सिनामीश्वर लाकानां वयदो रुव ॥ ॥ दक्ष वा ॥ वयद
 हंस वगधा वयं यन्मनस कुरुथ ॥ नृप धूर्ध्वं पुष्पा मि जगता मय का
 वरु ॥ ॥ दक्ष वा ॥ ॥ सर्व वा धा पक्षि मन्त्रं कुरु लायका सिनामीश्वर
 एव भवत्या कार्या मस्मद्देवि विना गनम् ॥ ॥ दक्ष वा ॥ ॥ दक्ष

मन्त्रं यथाकं अथ विमतिमं यत् (ग) मुक्ता निमुक्ता श्वे वाचा वृत्त्युत्पत्तिं
महासूत्रो ॥ नन्दः स पृष्ठजाता यत् (ग) दागर्कसंस्कृताः नन्दः स नन्दः
यिष्यामि विश्वं वलनिवासिनी ॥ यत् न यथातिवोदयः नृपति पृथि ॥ १०५ ॥
वीरस्य श्रुवतीर्य ह निष्यामि वेपथिर्लोकुदानवान् ॥ नृपयन्त्या
यत्ता नृपान् चैपथिर्लोकुदानवान् ॥ नृपयन्त्या ॥ १०६ ॥

कृष्णो यमा ॥ तत्तामादिवना ॥ १०७ ॥ सख्यं लोकावमानवा ॥ सुवकीया
हविष्यन्ति सत्तर्कवक्रदन्ति कामु ॥ १०८ ॥ सख्यं लोकावमानवा ॥ सुवकीया
नन्दसि ॥ मुनिरि ॥ १०९ ॥ सख्यं लोकावमानवा ॥ सुवकीया
नन्दसि ॥ मुनिरि ॥ ११० ॥ सख्यं लोकावमानवा ॥ सुवकीया
नन्दसि ॥ मुनिरि ॥ १११ ॥ सख्यं लोकावमानवा ॥ सुवकीया
नन्दसि ॥ मुनिरि ॥ ११२ ॥ सख्यं लोकावमानवा ॥ सुवकीया

ध्यामिस्मृताः ४ भागैः वा दृष्टः ४ भागैः ध्यावकैः ४ भागैः कर्तुमीति विख्यातिं न
 दायात् ॥ यो मां हृत्तु वि । तत्रैव यत्र धिष्यामि । इत्येनाख्यं महासूत्रं ॥ इत्यो
 दधीति विख्यातिं । कर्मनामक विषयति । यूनय्य हं यदा गीर्मे । तूर्यं क
 त्याहिमायले ॥ यकांसि हत्कयिष्यामि । मूनीनां गुणकावस्था ७ । तदा
 मां मूनयस्त्वर्थे । काथा न्यायनमृत्तय ४ ॥ श्रीमादधीति विख्यातिं । हन्म

[illegible]

सावर्धिकमन्त्रकथयदीमाहात्म्योनावाग्निमुक्तिः॥ ॥ ॥
 ॥ श्रीदय्युवाच ॥ अकिं रुवेयेमोनिर्त्य काद्यकयसमाहिकः॥ त
 स्यात्सकलावाधा ममयिष्यामममयस ॥ मधुकेटहमामये म
 रिषासुनघातनसु कीरुयिष्याकियतद्व द्येयुक्तनिमुक्त्याः
 ॥ अष्टम्यायदुर्द्धम्या नवम्यायेकवत्तसः॥ अष्टानिर्त्येव

श्रीराम
 लेख

यरुहा मममाहात्म्यमूलमे ॥ नक्त्याः ॥ कृतं किंचिद्दृष्टमाहा
 नवापदः ॥ रुविष्यातिनदाविद्या नवेवष्टिविधोजन ॥ मक्तानक्तय
 नक्त्य दस्यमावा नयाजक्तः ॥ नमक्तानलगाशोद्यात् कदाचित्तुसविः
 यति ॥ नक्त्या नमक्त्या हात्मा यति नयसमाहितः ॥ अक्तव्यसदा
 तक्ता पर्वसुक्तयनीमेष्टु ॥ अमक्तानमेष्टु मक्तानावीसुमद्व

न॥ तथा हि विधमूल्यां माहात्म्यं मम यन्मम ॥ यत्ते न० यत्ते न० यत्ते न०
 द्वितीयमायनमैतम॥ सदानं गच्छिमा॥ अ॥ मि॥ सान्निध्यं गच्छिमा॥ अ॥
 लिखदानं पूजाया॥ मन्त्रिकायां महात्मव॥ सर्वममैतच्च विन॥ मू०
 र्थं ग्रा० यमवच॥ जानता॥ कामता वापि वलि पूजां तथा कर्त्ता॥ यकी दिव्यं
 माहृयीत्या॥ वक्रिहामैतथा कर्त्ता॥ म० व० को लं म० हा पूजा॥ वि० य० त० या

श्रीराम
 ले०

ववार्षिकी॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं गृत्वा रुक्मिणमन्यत॥ सर्वदा धावि
 निर्मूला॥ धनधान्यसुगान्धित॥ मेनूष्यां मत्स्यसादन॥ रुक्मिण्युक्तिन०
 म० य० ॥ गृत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा वात्य रुक्मिण्युक्ता॥ यदाक्रमक
 पूर्य पूजायतनं निर्कृत्य० पूमान्॥ विषय० र्त्तं क० यं यानि॥ कल्याणं य
 ययत॥ नन्दनं व० क० र्त्तं यं सां॥ माहात्म्यं मम गृध्रतां॥ नानि० कर्म वि०

वेत्तु तथा इह स्वप्नदर्ममयं ग्रहणीजालं वायस्य माहात्म्यं शृणुयान्मम
 ॥ उपसर्गः ४ मर्मयानि, ग्रहणीजालं श्रुत्वा वृक्षा ४१ इह स्वप्नदर्ममयं नृसिद्धिर्दृष्टः
 स्वप्नमयं जायते ॥ वालग्रहास्ति हनानां वालानां भक्तिकावकम् ॥ ४२ ॥
 संधानकदचनृष्णं मेजीकवधमूलम् ॥ इह हनानामगवाष्णं वल्लहानि ॥ ४३ ॥
 कर्षणं वरुणास्ति कपिगवाणां यः नादवतामनी ॥ सर्वमममन्माहात्म्यं ॥ ४४ ॥

ममसन्निधिकावकम् पश्युष्वार्घ्यधूयेत्यगन्धदीपैस्तथा रुमेधावि
 लाक्ष्मीं कर्तुं नृसिद्धिं ॥ ४५ ॥ कर्मायै बहन्निमस्य अन्यथैव विविधैः कालैः ॥
 यदानेव स्वप्नमया ॥ यीतिर्मक्रियमसास्ति नृकृत्स्नयत्रिगुणं ॥ ४६ ॥
 हवति पापानि तथा वाग्यं पुण्यकृति ॥ वरुणा कर्मास्ति हनत्या ऊननां की
 र्त्तनममयूहं वृत्तिर्नयने ॥ इह देहानि वरुणासिद्धिर्दृष्टविकर्त

ताम्रदुर्गः सर्वं यकृद्विनिहतायः ॥ देव्याश्च देवानिह गच्छन्तु हृदय
विधायुधिः जगद्विधं विनिहन्ति नमोऽयं बुद्धविक्रमः ॥ निगुम्भय
महावीर्यो मेघाघ्राता लमो ययुः ॥ ७ ॥ वैरगवती देवी सानित्यायिषु
न ४ घू न ४ ॥ समुद्रयकृत्तुम्भय जगत्तथा विद्यालनन ॥ तयैतन्मो
कृत्तुविम्भयैव विम्भयैव सूर्यक ॥ सायाविता वविहानि बुद्धाजिह्वि ॥ ८ ॥

उपयुक्तं ॥ वाक्यं नयेन ७ सकलं बुद्धां मनुजं गव्यं ॥ महाकात्या
महाकालं महामात्री स्वयं यथा ॥ सैव कालमहामात्री सैव हृदि
वत्तजा ॥ क्लिप्तं कृत्वा निहन्ता न ॥ सैव कालमना ननी ॥ रुद्रकाल
नृणां सैव ॥ लक्ष्मीवृद्धि यदा गृह ॥ सैव साधनं अलक्ष्मी विनाम
शोध जायते ॥ मुतामैव जिनायुष्य ॥ इयं गन्धदिहिल्लथ ॥ ९ ॥

निर्विहं पूर्णं च सनिन्धर्मं कथां मुखात् ॥ ॥ ॥ ॥
 कृतिशीला मार्कण्डेयपूजा (होता वरुण) कर्मन्वन्तं ददवी माहात्म्यं दवी वाच
 म् ॥ ॥ ॥ अविनाशाय ॥ अमरं कथितं वाजन्तं दवी माहात्म्यं
 कर्मन्वन्तं ददवी यथा दन्त्यार्थं कर्तुम् ॥ विद्यामथैव किं
 न कर्तव्यं हि सुमायया न ज्ञात्वा भवत्यर्थं न तथैवान्यं विवर्तिनः ॥

माह कर्मादितां च भो कर्मण्यनि यावत् ॥ कामये हि महामा
 मवर्धय वममवर्धनी ॥ आवाधितामैव नृणां सागस्य न पि वंशदा ॥ ॥
 ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ कृतिस्तथा वचः ॥ सुप्रथमं स नमाधिप
 ॥ ॥ प्रथमं यमहात्म्यं नमोर्ध्वं गेहं च तं ॥ निर्विहं कृतिमन्त्रं
 न मायाय हौते न च ॥ अगमस्य रूपं स सर्वं ॥ मम हं मूला ॥

सन्धर्गनाथसन्ध्याया नदीवृत्तिनसंस्क्रितः॥ सवर्गस्थसुपुष्प
 दतीसुक्कपर्वजयन्॥ गोतसिन्धुलिनदया॥ कृत्वास्तिमदीमयी
 जूर्द्धमथैककुत्तस्य॥ पुष्पधूपानितय्यते॥ निमालोभयेता
 दात्री, सन्मनस्कोसमादिनी, ददुस्मीवलिनेव निजगणान्
 मुक्तिरस्य॥ एवंसमावाधयता स्तिविषयेयतात्मना॥ यन्निव १००

स्रजगद्वागीपुष्पक्रीयावदुत्तिका॥ ॥ श्रीदधुगव॥ य०यार्थ
 मत्तयाहप, त्वयाचकलनेन्दन, मरुत्त० पु० धर्मीसर्वयन्त्रिदश
 ददामि॥ ॥ मार्कलेयउवाच॥ गतोदयुन्तपायस्य मवि
 म्भयजन्मनि, जूरेवचनिर्जयाई, कृत्वासुवत्तन्मना॥ सोपि
 म्भयजान्, वदनिर्दिष्टमानसः॥ समस्तमिदं कियत्॥ ॥ सन्

ॐ नमो भगवते ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
दवर्गसमूहानां ॥ गोत्रीणां कर्तृद्वी, दुर्गा नाम्नी
विष्णुना ॥ कात्यायनी महादेवी, चण्डिका महादेवी ॥ सावित्री, दुर्गा
गीसायगयणी, वक्राक्षी वक्रवादिनी ॥ नावायणी रुद्रकाली १०२
नूदाक्षी सर्वमङ्गला ॥ अग्निहोत्राक्षी, कालवर्धिनी

यस्विनी ॥ महासुता महासाक्षी, विष्णुमायाजलादेवी ॥
महादेवी मुक्तकंठी, धात्र्युता महावला ॥ अजिता नन्द
कारुणा, प्रागर्हता, शिवप्रिया ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
लुङ्गा, कृष्णायाम् ॥ शिवदूती मृगाली, मृत्पृथ्वीवर्म
ध्वनी ॥ वावाहीनावा, संहारिणी, रीमा रुद्रवतीनादिनी ॥ अग्निः

लुत्तिधुतिर्मध विद्यालक्ष्मीसुखती ॥ अन्ननाविदुया
 पूर्यमानसकाकायनाजिगा ॥ रुवातीपावतीदन्ताहेम
 वर्यविकाशिका ॥ अर्त्तनामयदेहिथे सुगाथाकषधी
 मगा ॥ १॥ मावर्तयद्युत्तु सचातयाधिर्वधनाम् ॥ आवर्त १०३
 नसरुखेदलरुतवाचिर्नरुत्त ॥ ॥ निधी ॥

क्षीरार्गसमाप्य ॥ ॥ अभिरवाच ॥ मार्क ॥ ७५ ययूना ॥
 कां देवीमारुत्तमूरुम ॥ य ४ य १० सु ७ या रुक्का तस्य मू
 किर्त्तसं ४ य ४ ॥ अरुनाद्रिस्तुर्ग्याता यन्मूनमधिकाक
 तं ॥ विद्यत्रीर्गुतत्सर्व कमस्य यन्ध्वयी ॥ यदकवयदय
 दं सनव्यजनवर्जितं ॥ तत्सर्वं कस्यागादवि यसीदयव

भव्यवी ॥ यस्य स्यात्तावन्नारुक्ता तथा यस्तु क्रियादिभूः न्यु
 ने संपूर्णतां यावत् प्रसदात्यनं भव्यवी ॥ मनुहीनं क्रियाही
 नं रुक्मिणीनं यनं भव्यवी ॥ यस्तु तासि मया दत्तं विरुत्तात् ॥ इति
 वनदारुव ॥ आवाहनं च पूजां च त्वत्माहात्म्यं न तथा ॥ वि ॥ १०४
 मूर्जनं न जानामि चतुर्कलं कमलं मे ॥ कामभ्यवीजं मा
 यं २ ॥ ११

ता सुचिदानंदविग्रहं गृहा धर्माभिर्मासर्वा ॥ प्रसीकं
 नृधनिधं ॥ गुणानि गुणं गच्छीतं गृहा धर्मसंलक्षणं ॥
 यं सिद्धिभावयुग्मं दत्तं तस्य सादात्यसिद्धिनाथा ॥ १॥
 कुतिसंयुक्तं लक्षणं समाप्य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 उच्यते नृप रिचं स रिचं नामादि लो नृप विषयं द ॥ ॥ ॥

हंमिगावन् (६) राविरुर्मह मिद्यानीअरुमहिनारा॥
॥ अहंभाममाहमसं विरुर्मह ह्यहानमृतपुमर्हिर
गं । अहंदधमिदविर्लहविश्वत रुपाधयऊयमानासू ६ न
नन ॥ ॥ अहंवाखीसंगमनीवसुना विमिहोययथमा १०५
यहाना । नाम्माधयाद्यदधूपूगारु विष्ठागं रयावध

यर्का ॥ ३ ॥ मयासाः त्तमतिथावियन्मिस्व४यालीनिसन्धीष्टु (६)
त्यर्का । अमन्तवामान्कडयक्रियन्ति शुद्धिश्चिधिशिचिचनकवदा
मि ॥ ४ ॥ अहभवस्वयमिदं वदामि रुष्टं दव रितूनमानूधारे
४ । यंकामयनैतमृग्यं कृ (६) मि तं वक्रा लं तमृषिर्गं ममध ॥
५ ॥ अहं नूदायधनूनातनामिबक्रद्विषधानवहं नवाउ । अ

हं जनायाममर्दं कृत्वा सहं यावापृथिवी आविर्बभूव ॥ ७ ॥ अहं
 सुवयितवस्तस्य सुहृन्मम योनिवत्सराद्युक्तस्तस्य मूढः ॥ ८ ॥ अवि
 तिष्ठतु वनानि विष्टं तौ सुहृन्वत्सराद्युक्तस्तस्य मूढः ॥ ९ ॥ दुर्गा
 अहं भववातः वववासावतमाधुवनानि विष्टा ॥ १० ॥ १०/६
 ग्राहिवायं नाना पृथिवी ग्रावती महिमा सर्वरुत ॥ ११ ॥ नूति
 अथवा कदवी सुकौसमाक्रम ॥ ॥ छलम् ॥

धाय ह्यक्रियादिषू न्यूनं सर्वं धृत्वा यत्तु पुत्रादात्य वभं गवत्री ॥ मनुही
 नं क्रियाहीनं शक्तिहीनं यं वभं गवत्री ॥ यत्तु काश्चिन्मयोदवि ॥ तत्तात्वं व
 यदाश्व ॥ आवाहनं यत्तु जीवत्यन्माहात्म्यं जयं तथा ॥ विसर्ज्य न नजा
 नामि यत्तु कर्त्तव्यं कमस्तुभ ॥ कामं गवत्री जगन्माता सच्चिदानंदविग्रह
 ॥ गृहं गवत्री मिमांसा सर्वं प्रसीदकं दूषानिधं ॥ गुक्तानि गुक्तं गवत्री

कविषमं नवहंतवाउ। अहं नवा रममदंष्ट्र। भो न्यहं या वापृथिवी भूविव
 म॥७॥ अहं सुवेपि नयस्य स र्द्धमनया निवप्या अन्तस्स मूख। तथा विनिष्ठ
 उवमानू वि। म्हाती मया वर्षम। एष स्य ममि॥ १॥ अहं भवदोतहं वय
 वाम्या नरुमा एष उव नो निविग्धा। यथा द्वि वाप वचना। पृथिवी तावती मरु
 ता सह व॥ ८॥ ॥०॥ निम। यदो कंदवी सुको सम। कम॥ ॥०॥ श्री ३०८

१८ यदवया। ७० अहं नव कसया विमम विन्दु कवलीन
 मी विमम। तदम सं नम यसा दन ४ म क न सि दि ध्यः
 स देव का य ता॥ माहा त्वं च दि दि र्द नू ज वि नि दन
 स क म एष क व दं र क हं य प्रमा न य ज व ति ज याम न
 मू डा वि ही न। य स एष वि न्द मा हा क न य द न हि मा वा क

संज्ञा विचार्य वे सावकाशभी लेखनम कनू सयाद विमा
न ४ क म ह ३॥
य म वि

५

आशा आर्क

2043

I

ASHA ARCHIVES



2043

I